॥ श्री सुरभ्यै नम: ॥

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

नवंबर 2025

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के सत्संकल्प से

श्री गोवर्धननाथ मन्दिर

गो गोपाल कोरीडोर

शिलान्यास

गोपाष्टमी 29 अक्टूबर को संपन्न हुआ

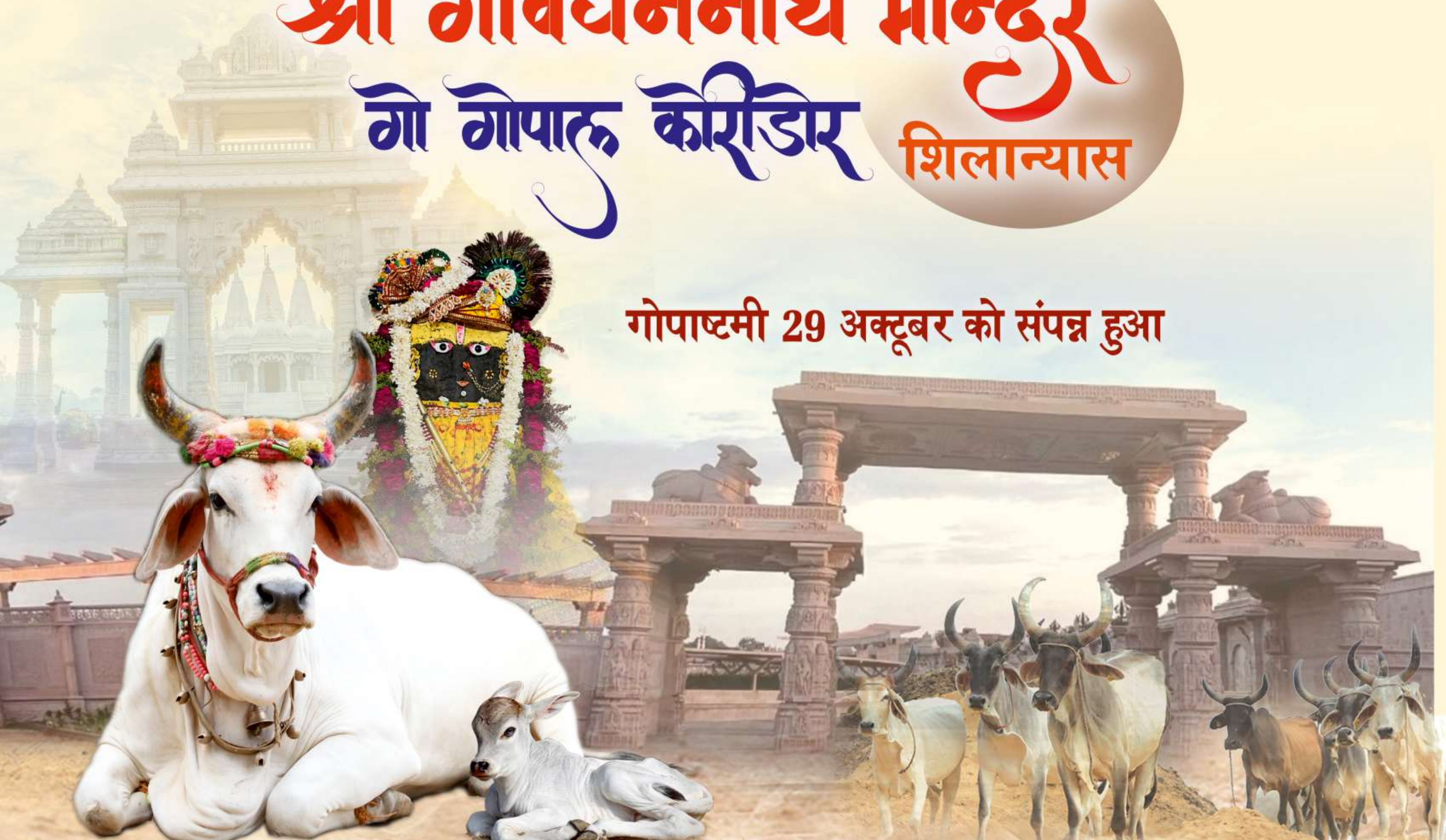

वर्ष: 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 08

सुरभि उवाच

हे मेरे प्रिय पुत्रों !

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत प्रेमभरा मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

हे मेरे प्रिय पुत्रों! जब तक गो का सम्मान नहीं होगा तब तक राष्ट्र का कल्याण अधूरा रहेगा। देश भर में विभिन्न साधु–संत, धर्माचार्य व गोभक्त जनमानस गोरक्षा हेतु तरह–तरह के आंदोलन कर रहे हैं, तरह–तरह के सुझाव दे रहे हैं। कोई गो को राष्ट्र माता का सम्मान देने की बात करते हैं, कोई ग्राम माता से राज्य माता बनाने का संकल्प कर रहे हैं। उन सबसे मेरा आग्रह है कि ऐसा नहीं है कि आपके पूर्वजों ने ये सब आंदोलन नहीं किये। ये सब प्रयास वे कर चुके हैं, इससे भी कई गुना अधिक शक्ति सामर्थ्य लगाकर वे कई बड़े–बड़े आंदोलन कर चुके हैं, फिर भी मेरे गोवंश की स्थिति सुधरने की बजाय दिनों–दिन बिगड़ ही रही है। फिर आखिर कमी कहाँ रह गई थी उनके प्रयासों में?

हे मेरे प्यारे पुत्रों! कमी कहाँ रही कि आज भी आपकी गोमाता निराश्रित होकर भूखी–प्यासी दर–दर सड़कों–गलियों में कचरा खाकर अपने जीवनयापन के लिये संघर्ष कर रही है। मंथन इस बात का करिये कि मेरे गोवंश को आज सबसे पहले किस बात की आवश्यकता है, उसी दिशा में प्रयास करो तो सफलता जल्दी मिलेगी। हे मेरे प्रिय पुत्रों! मेरे वंश को तत्काल सेवा, संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है। उसके पंचगव्यों की महत्ता को समझकर उसका उपयोग करने की आवश्यकता है। वस्तुतः गाय घरों से निकलकर सड़क पर आई क्यों, उसके कारणों की तह में जाना होगा और जो गाय सड़कों पर दुःख पा रही है, उनके दुःखों को दूर करना पहला कार्य हो। इसके लिये समस्त निराश्रित गोवंश को संरक्षण में लेकर उसकी सेवा करनी होगी। फिर संरक्षित गोवंश का संवर्धन करना होगा, पंचगव्य का मानव जीवन में उपयोग सिद्ध कर उसको जन–जन तक पहुँचाना होगा।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! घर–घर, गोशाला–गोशाला गायों से सम्पन्न होंगे, सड़कों पर निराश्रित गोवंश नहीं होगा तभी तो उसको सम्मान मिलेगा। बात हम गो सम्मान की कर रहे हैं पर अपने हाथों से प्रत्यक्ष गोसेवा नहीं करते हैं तो हमारी कथनी व करनी में अंतर है। फिर बात कैसे बनेगी? इस युग में गोसेवा को एक नई दिशा देने वाले श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय रचनात्मक गोसेवा महाअभियान को समझो और अमल करो। गाय तो राष्ट्रमाता क्या 'गावो विश्वस्य मातर' वेद–पुराणों में घोषित है, कमी सेवा में है। जब मेरा अखिल गोवंश सेवा में आ जायेगा तो गोहत्या भी बंद होगी और सम्मान भी मिलेगा।

तुम्हारी प्यारी
माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:8

कार्तिक मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 नवम्बर–2025

1. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 04
2. **उत्तम वरदान के लिये गो से प्रार्थना** – संकलित 07
3. **वेदवाणी में गोमहिमा (गोसूक्त)** – संकलित 08
4. **ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से 09
5. **श्रीमदभागवत कथा** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 12
6. **भक्त चरित्र** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 15
7. **श्री राम कथा** – पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 17
8. **श्री शिव महापुराण कथा** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 20
9. **भज गोविंदम्** – श्रीमदआदिशंकराचार्य द्वारा रचित 22
10. **परमपद (जीव का अपना असली घर)** – साभार साधक संजीवनी 23
11. **श्री मद्भागवत कथा** – गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज 25
12. **जाऊँ तो जाऊँ कहाँ** – सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 27
13. **गीत** – गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी 28
14. **संस्था समाचार** – अक्टूबर माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 29

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

गोसेवा भारतीय संस्कृति है

अंग्रेजी शासन के पहले गोरक्षा आंदोलन की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। उस समय सर्वत्र पर्याप्त गोचर भूमि थी। बहुत अधिक मात्रा में चारा उत्पन्न होता था इसलिए गायों को जीवन भर पूरा चारा मिलता था। बड़े विशाल और बलवान बैल होते थे। एक-एक हल में 9 या 10 जोड़े बैलों तक जुतते थे। अच्छा चारा दाना मिलने तथा सेवा की सुव्यवस्था होने के कारण गोवंश बीमार भी नहीं होता था। आज तो कितनी भयंकर-भयंकर बीमारियों हो रही है गोवंश में और इसमें भी एक भयंकर दुष्ट बीमारी हमारे वेदलक्षणा गोओं में प्रवेश कर चुकी है। गुजरात और राजस्थान के बहुत बड़े भूभाग पर लाखों गाएं इस बीमारी की चपेट में आ गई हैं।

इस संक्रमण से गायों के पांव सूज जाते हैं, शरीर पर जगह-जगह बड़े-बड़े फोड़े हो जाते हैं, गला अवरुद्ध हो जाता है, गाएं बैठ नहीं सकती है और ऐसा समाचार आ रहा है कि हजारों गाएं इस रोग से मर गई। गोधाम पथमेड़ा की केवल 12 गोशालाओं का समाचार है, आज की रिपोर्ट है 15 दिन में इस बीमारी से एक हजार गाएं पधार गई है। घरों में, गांव में, छोटी-छोटी गौशालाओ में सूनी सड़क पर घूमने वाली गायों को यह भयंकर रोग अपनी चपेट में लिए हुए है। भारत में और भारत के इन दोनों प्रांतों में सरकार हैं, यद्यपि वे भी उनका अपना प्रयास करती हैं पर जैसा करना चाहिए ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। कोरोना का संक्रमण आया 500 लोग भी संक्रमित नहीं हुए थे और पूरे देश में तालाबंदी कर दी थी लॉक डाउन कर दिया था, पर लाखों गाएं संक्रमण के चपेट में आ गई, हजारों गाएं काल कलवित भी हो गई और उनकी इस रोग को रोकने की कोई दवाई नहीं है भारत सरकार के पास में, फिर भी अभी तक इस महामारी को राष्ट्रीय आपदा घोषित नहीं किया गया है यह बड़े दुःख की बात है। यह गाय के प्रति उपेक्षा का प्रमाण है। ये सरकारें गाय को अनावश्यक समझती है आज की नीति से ऐसा लगता है।

इस कारण जिस देश में, जिस धरती पर गाय को हमारे पूर्वजों ने पूजा हो, इस व्यवस्था का केंद्र थी, जन्म से लेकर मृत्यु तक गाय थी, भगवान भी गाय के लिए आते थे, राजा और ऋषि, सेठ और मजदूर सभी गाय को समर्पित थे। एक-एक गाय के लिए बड़े-बड़े राजा और ऋषि प्राण देते थे, पर आज हजारों गाएं कत्लखानों में मारी जा रही है वो तो है ही, सड़कों पर प्लास्टिक और कचरा खाकर दुःखी हो रही है और इस भयंकर रोग ने उनको चपेट में ले लिया फिर भी आज का शासक वर्ग और संभ्रांत समाज अभी तक उस गोवंश की ओर देख ही नहीं रहा है, जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है। लाखों गोवंश इस बीमारी से पीड़ित है।

यह सब इसलिये इस बीमारी से पीड़ित हो रही हैं, क्योंकि इस गोवंश को उपयुक्त चारा और पानी नहीं मिल रहा है, जिससे उनकी रोग निरोधक शक्ति समाप्त हो गई है। गोवंश भूख-प्यास से कुपोषित हो गया है और कुपोषण के कारण गायों का स्वास्थ्य समाप्त हो गया। गाएं झरझर हड्डी निकली हुई गौशाला में, सड़कों पर और घरों में घूम रही है। इसलिए वह सामान्य बीमारी को भी सहन करने में असमर्थ है। यही गोधन कभी ऐसे संक्रमण से पीड़ित नहीं हुआ। इसमें जो संक्रमण आया है यह

हमने हमारे इस जीवनकाल में तो देखा नहीं और हमने सुना भी नहीं कि एक साथ ऐसा भयंकर रोग गऊओं में कभी आया था। कुछ लोग कहते हैं कि यह कहीं-कहीं आया था कई कहते हैं कि यह पाश्चात्य जगत से आया हुआ है इसलिए पाश्चात्य जगत का जो शंकर पशु है वह इससे संक्रमित नहीं हो रहे हैं और हो रहे हैं तो वे बच जाते हैं क्योंकि उनको पहले से ही ऐसी जहरीली दवाइयाँ दे दी है कि यह संक्रमण के जहर को सहन करने में समर्थ हो गए ऐसा कह रहे हैं। सच्चाई क्या है वे जाने पर हमारे वेदलक्षणा गाय और उसका वंश इस समय उस बीमारी से पीड़ित है। पहले से ही वह उपेक्षित, तिरस्कृत और अपमानित तो था ही।

भगवान की कृपा से इस वर्ष अच्छी बारिश हो रही थी मन में संतोष हो रहा था कि खूब चारा होगा, गऊओं को खूब चारा मिलेगा। गोवंश सुखी होगा, संतुष्ट होगा, जो थक गया था, हड्डी निकल गई थी वह सब ठीक हो जाएगा पर इस बीमारी के आने की बात से मन को बहुत बड़ी व्यथा हो रही है कि अब चारा भी है, पानी भी है, पर गाएं चर ही नहीं पा रही है, बैठ ही नहीं पा रही है। बहुत सारी देशी दवाई भी है पर जो खाना ही बंद कर देती है तो उसको कैसे खिलाएं? भगवान गोविंद ही गोमाता के रक्षक रहे हैं और वही उनकी रक्षा करेंगे।

सज्जनों प्रसंग गोरक्षा का चल रहा है, गो के महत्व का चल रहा है। इसलिए यह निवेदन कर रहे हैं कि अतीत में तो हमारे पूर्वज गायों का पालन सुंदर ढंग से करते थे, गोचर भी खूब थे, चारा भी खूब था इसलिए गाय बैल सभी स्वस्थ और तंदुरुस्त होते थे और हमारे घरों में भी अनुभवी लोग होते थे, गायों की चिकित्सा जानने वाले कई लोग होते थे। वे वहीं पर इधर-उधर से जड़ी बूटियां लेकर सफल चिकित्सा कर देते थे। बाहर से कोई दवाई नहीं लानी पड़ती थी। यदाकदा ही गाय के चमड़े का व्यवहार था, जो गायें शरीर छोड़ देती थी उसके चमड़े का जूता कुछ लोग पहनते थे, अधिकतर बचते थे, पर कसाई खाने तो बिलकुल नहीं थे, मांस आदि बाहर भेजे जाने का तो प्रश्न ही नहीं था जैसे आजकल चमड़ा मांस आदि बाहर भेजते हैं। ऐसी बात अंग्रेजों से पहले तो कोई समझता ही नहीं था। चमड़े की जूती भी भैंस आदि पशुओं की चमड़े की पहनते थे गाय के चमड़े की जूती नहीं पहनते थे या उससे बचने का भाव था। गाय के चमड़ा का भी उपयोग नहीं करते थे इतना भाव था।

यहाँ जो आजकल कत्लखानों की बात सुनते हैं वे अंग्रेजों के पहले कोई नहीं थे। जो लूले लंगड़े गाय बैल होते थे बुड्ढे हो जाते थे उनकी सेवा के लिए सेवा की दृष्टि से स्थापित बहुत सारी गौशालाएं होती थी। बूढ़े गाय-बैलों की केवल सेवा करते थे। खेतों में गाय-बैलों के गोबर की प्रचुर खाद डाली जाती थी इससे बहुत अधिक अन्न पैदा होता था। आरोग्यवर्धक औषधियाँ प्रजा को मिलती थी। घी, दूध, दही की तो मानो नदियों बहती थी। हमारे बाड़मेर के आगे मुनाबाव है अभी अंग्रेजों के काल तक यहाँ पूरा रेल का डिब्बा घी से भरता था, इतना घी वहाँ होता था। यह तो अभी तक हमें याद है कि दूध बेचना पाप मानते थे। दूध बेचते नहीं थे दूध की आवश्यकता होती तो एक दूसरों के घर से दूध ले आते थे। जब हमारी गाए किसी कारण से दूध नहीं देती तो पास वाले घर से गाय का दूध मिल जाता था। पैसा कोई दूध का नहीं लेता, दही का कोई पैसा नहीं लेता था। हाँ घी का अवश्य मूल्य लिया जाता था, बैलों का मूल्य लिया जाता था।

कहते हैं कि मुसलमानों के शासनकाल में भारत में एक रुपये का 16 सेर घी बिकता था। अंग्रेजों के आने के बाद भी घी 1 रुपये का 5 सेर तक बिकता था। मुसलमानी शासन में भी गाय का कम महत्व नहीं समझा जाता था। बाबर, हुमायूं और

अकबर ने गोवध रोक दिया था। कई मुसलमान शासकों ने गायों की नस्लों को उन्नत बनाया था। अंग्रेजों के आने के बाद गोरों के लिए गोमांस की आवश्यकता हुई। व्यापारी नीति से चमड़े का निर्यात आरंभ किया, कानूनी तौर पर जगह-जगह कसाई खाने खोले और उत्तरोत्तर गोहत्या बढ़ती गई।

सन् 1917 सन जॉन ऑर्डर फान ने प्रतिवर्ष एक करोड़ गोवध का अनुमान लगाया था। सन 1929 में छिंदवाड़ा जो मध्य प्रदेश में पड़ता है छिंदवाड़ा के वकील श्री ब्रज मोहनलाल जी वर्मा ने विभिन्न सरकारी रिपोर्ट और पत्र व्यवहारों के आधार पर यहाँ के कसाईखानों में प्रति वर्ष सवा करोड़ गाएं और बैलों की हत्या होना बताया। दरभंगा केसरी धरमलाल सिंह जी के मतानुसार वर्ष भर में कुल मिलाकर एक करोड़ 22 लाख गौएं काटी जाती थी। सारांश यह है कि उस समय के विशेष व्यक्तियों की सम्मति के अनुसार प्रति वर्ष लगभग एक से सवा करोड़ गोवंश प्रति वर्ष या प्रति मिनट लगभग 19 से 24 तक गोएं मारी जाती थी।

दु:ख की बात है कि आज भी गोवध जारी है और केवल जारी ही नहीं, गोवध दिनों दिन बढ़ रहा है। अंग्रेज चले गए पर गोहत्या बंद नहीं हुई। गोहत्या को देखकर स्वाधीन भारत के प्रारंभ काल में भी राष्ट्र पुरुषों का अंतकरण दहल उठता था और इसीलिए समय-समय पर किसी न किसी प्रकार से गोरक्षा का प्रयास भी होता था।

आर्य समाजके संस्थापक स्वामी दयानंद जी सरस्वती ने तो गोरक्षा का बड़ा प्रयास किया अंग्रेजो के समय। उन्होंने गो करूणानिधि नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की, फर्रुखाबाद के सेठ मोहनलालजी, हरिद्वार के बाबा भगवान दासजी, काशी के भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी, स्वामी आलारामजी, सागर सन्यासी, पंडित नटवरलालजी चतुर्वेदी गोभक्त हासानंदजी, कर सेठजी सौरव जी, जस्सावाला सरजान, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी और महात्मा गांधीजी व अनेकों महानुभावों ने अपने-अपने क्षेत्रों में, अपनी-अपनी योग्यता, पद्धति तथा सुविधा के अनुसार गोरक्षा के लिए विभिन्न प्रकार से प्रबल आंदोलन तथा महान कार्य किए। महाराष्ट्र के चौड़ेजी महाराज ने गोरक्षा का बड़ा प्रयत्न किया। गो विश्व ज्ञान से भरा हुआ गोज्ञान कोष नाम का ग्रंथ बनाया। अनेकों संस्थाएं स्थापित हुई। देश भर में जगह-जगह लोग उस समय भी गोसेवा करने लगे। गांधी जी के द्वारा स्थापित गोसेवा संघ हिसार की गोरक्षणी सभा, बिहार की गोशालाएं सोसाइटी और भारतीय गोसेवक समाज आदि अनेक संस्थाएं उस समय प्रारंभ की गई जो आज भी चल रही है।

हमारी अपनी सरकार आने के बाद भी सन 1947 में जीव दया मंडल में और हिसार की गोरक्षणी सभा में जो आंदोलन हुए उसमें लाखों पत्र-तार सरकार को भेजे। महात्मा करपात्री जी द्वारा संस्थापित धर्म संघ की ओर से बड़ा सुन्दर और विशाल प्रयत्न हुआ, सत्याग्रह हुआ। हजारों साधु, ब्राह्मण, गोभक्त जेल गये। स्वयं धर्म सम्राट श्री करपात्रीजी महाराज को जेल में रहना पड़ा। उसी समय राष्ट्रीय स्वयं संघ की ओर से सवा करोड़ हस्ताक्षर भेजे गये। स्वामी करपात्रीजी महाराज ने गोरक्षार्थ सहस्त्र चंडी आदि अनेकों अनुष्ठान करवाए।

वृंदावन में सेठ हंजारीमल जी सोमानी के प्रयासों से वृहद अनुष्ठान हुआ। प्रयाग में निंबार्क संप्रदाय के पूज्य श्री राधाकृष्णजी आचार्य ने अनुष्ठान कराया। ब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी महाराज ने गोसेवा व्रत धारण किया। धर्मवीर रामचंद्रजी वीर ने कई लंबे अनुष्ठान किये। धर्म सम्राट करपात्री जी महाराज ने पुनः दूध, दही, मक्खन देने का सत्याग्रह शुरू किया। आर्य समाज के वीर और बुद्धिमान महानुभाव कमर कस कर गोरक्षा के आंदोलन में साथ जुड़ें। हिंदू सभा ने भी गोवध के विरुद्ध बुलंद आवाजें उठाई।

भारत गोसेवक समाज की ओर से भी जगह-जगह गो सम्मेलन हुए। अनेक तरह से रचनात्मक कार्य हुए। राज ऋषि पुरुषोत्तमदास जी टंडन और संत विनोबा भावे आदि ने समय-समय पर गोरक्षा के लिए बड़ा प्रयास किया। नामधारी सिख संप्रदाय जिनके सतगुरु रामसिंह जी महाराज तथा उनके कूका नामधारी सिख गोवध बंदी कराने के लिए बलिदान हुए थे, उन्होंने भी गोवध के विरुद्ध आवाज उठाई थी। सतगुरु प्रताप सिंह जी सतत प्रयत्न में लगे। इनके अतिरिक्त अभी भी और भी बहुत से प्रयत्न चालू हैं। ये सब 1950 और 1960 के दशक की बात हुई।

सज्जनों! इन सब प्रयत्नों के बाद भी भारत सरकार ने गोवध बंद नहीं किया और इस समय भी भारत में अनवरत गोवध चालू है। हम लोग इस समय जो है 2025 में जी रहे हैं। देश को स्वतंत्र हुए लगभग 80 वर्ष होने को आये हैं, देश में अनेकों परिवर्तन हुए, कई नए कानून बनाये गये, नागरिकों को अनेकों सुख-सुविधाएं दी गई, वन्य पशु-पक्षियों की रक्षा के लिये कड़े से कड़े कानून बनाये। एक कछुए को घर में रखने पर या उसको किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाने पर दण्ड का प्रावधान है, मगर गाय को सड़क पर सबके सामने मारकर खाने वाले के विरुद्ध कार्यवाही के कोई सख्त कानून नहीं है। गोवधा बंदी के लिये सरकारों ने कोई कार्य नहीं किया। बल्कि गोवध रुकने की बजाय प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है। गऊओं के अधिकार कम होते गए। सरकार बदली पर सरकार ने अपनी नीति नहीं बदली, नियत नहीं बदली। गोमाता की रक्षा के लिए आज से 50-60 साल पहले जो लोग आंदोलन में प्रवृत्त थे उनका कार्य अधूरा रह गया उसे आज हमको पूर्ण करना है।

सरकार से तो गोवध बंदी की हमारी मांग यथावत है ही, पर गोरक्षा के लिये हम केवल सरकार के भरोसे न रहें, आओ! हम सब मिलकर अपने हाथों से प्रत्यक्ष गोसेवा कर गोमाता की रक्षा सुनिश्चित करें।

उत्तम वरदान के लिये गो से प्रार्थना

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

जिसने समस्त चराचर जगत् को व्याप्त कर रखा है,उस भूत और भविष्य की जननी गौ माता को मैं मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

देहस्था या च रुद्राणी शंकरस्य सदा प्रिया।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

भगवान शंकर के आधे अंग में विराजने वाली जो मूल रुद्राणी नाम की प्रियतमा शक्ति हैं, वह गोरूपा देवी मेरे पाप-ताप को दूर करें।

विष्णोर्वक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा या च विभावसोः।
चंद्रार्कश क्रशक्तिर्या धेनुरूपास्तु सा श्रिये।।

जो भगवान विष्णु के हृदय में विराजने वाली पद्मालया भगवती लक्ष्मी हैं और जो अग्नि के साथ नित्य स्थित रहने वाली स्वाहा नाम की शक्ति है तथा जो चंद्रमा, सूर्य एवं इंद्र की साक्षात इष्ट शक्ति हैं, वह गो रूपा देवी मेरे लिए कल्याणदायिनी लक्ष्मी बनें।

चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च।
लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे।।

जो चतुर्मुख ब्रह्मा जी की आत्मशक्ति रूपा विद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती देवी हैं और जो धनाधीश कुबेर की लक्ष्मी रूपा शक्ति हैं तथा जो समस्त लोक पालों की ऐश्वर्य रूपा लक्ष्मी हैं, वह गोरूपा धेनु मेरे लिए वरदायिनी हो।

स्वधा या पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञभुजां च या।
सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे।।

जो श्रेष्ठ पितरों की स्वधा नाम की शक्ति हैं और जो यज्ञ भुक देवताओं के लिए स्वाहा नाम की सहायिका शक्ति हैं, वह सब पाप-तापों को नष्ट करने वाली कल्याण स्वरूपा गो मुझे परम शांति प्रदान करे।

वेदवाणी में गो महिमा

संकलित

या लक्ष्मीः सर्व भूतानां या च देवेषु संस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम शान्तिं प्रयच्छतु।।

जो समस्त प्राणियों की तत्त्वतः वास्तविक लक्ष्मी हैं और जो सभी देवताओं में हविष्य रूप से स्थित हैं, वह धेनुरूपा देवी मुझे सुख–शांति प्रदान करें।

गोसूक्त

अथर्ववेद के चौथे काण्ड के 21 वें सूक्त को 'गोसूक्त' कहते हैं। इस सूक्त के ऋषि ब्रह्मा तथा देवता गो हैं। इस सूक्त में गौओं की अभ्यर्थना (प्रार्थना, अनुरोध, निवेदन, विनती) की गयी है। गायें हमारी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति का प्रधान साधन हैं, मूल है। गो से हमारे भौतिक पक्ष से कहीं अधिक आस्था जुड़ी हुई है। वेदों में गाय का महत्त्व अतुलनीय है। यह 'गोसूक्त" अत्यन्त सुन्दर काव्य है। गोमहिमा का एक साथ इतना उत्तम वर्णन बहुत कम स्थानों पर मिलता है। मनुष्य को धन, बल, अन्न और यश गो से ही प्राप्त होते हैं। गौएँ घर की शोभा, परिवार के लिये आरोग्यप्रद और पराक्रमस्वरूप हैं, यही गोसूक्त से परिलक्षित होता है।

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः।।

गौएँ आ गयी हैं और उन्होंने कल्याण किया है। वे गोशाला में बैठें और हमें सुख दें। यहाँ उत्तम बच्चों से युक्त बहुत रूपवाली हो जायँ और परमेश्वर के यजन के लिये उषःकाल के पूर्व दूध देनेवाली हों।

इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद् ददाति न स्वं मुषायति।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्।।

ईश्वर यज्ञकर्ता और सदुपदेशकर्ता को सत्य ज्ञान देता है। वह निश्चयपूर्वक धनादि देता है और अपने को नहीं छिपाता। इसके धन को अधिकाधिक बढ़ाता है और देवत्व प्राप्त करने की इच्छा करनेवाले को अपने से भिन्न नहीं ऐसे स्थिर स्थान में धारण करता है।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।।

वह यज्ञ की गौएँ नष्ट नहीं होतीं, चोर उनको दबाता नहीं, इनको व्यथा देनेवाला शत्रु इन पर अपना अधिकार नहीं चलाता, जिनसे देवों का यज्ञ किया जाता है और दान दिया जाता है। गोपालक उनके साथ चिरकालतक रहता है।

न ता अर्वा रेणुककाटोऽश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः।।

पाँवों से धूलि उड़ानेवाला घोड़ा इन गोओं की योग्यता प्राप्त नहीं कर सकता। वे गौएँ पाकादि संस्कार करनेवाले के पास भी नहीं जातीं। वे गौएँ उस यज्ञकर्ता मनुष्य की बड़ी प्रशंसनीय निर्भयता में विचरती हैं।

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद्गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्।

गौएँ धन हैं, गौएँ प्रभु हैं, गौएँ पहले सोमरस का अन्न हैं, यह मैं जानता हूँ। ये जो गौएँ हैं, हे लोगो! वही इन्द्र है। हृदय से और मन से निश्चयपूर्वक मैं इन्द्र को प्राप्त करने की इच्छा करता हूँ।

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु।।

हे गौओं! तुम दुर्बल को भी पुष्ट करती हो, निस्तेज को भी सुन्दर बनाती हो। उत्तम शब्दवाली गौओ! घर को कल्याण रूप बनाती हो, इसलिये सभाओं में तुम्हारा बड़ा यश गाया जाता है।

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु।।

उत्तम बच्चों वाली, उत्तम घास के लिये भ्रमण करने वाली, उत्तम जल स्थान में शुद्ध जल पीने वाली गौओ! चोर और पापी तुम पर अधिकार न करें। तुम्हारी रक्षा रुद्रके शस्त्र से चारों ओर से हो।

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.........

जब महाराज जी छोटे थे तब नानाजी के संग बलदेवपुरी जी महाराज और एक पंडितजी घर पर आये। संतों को देखकर छोटे-छोटे बच्चे पास में आये, आपश्री भी साथ में थे। संतों ने कहा बालकों हनुमान चालिसा कौन सुना सकता है? सब बच्चे चले गये, लेकिन महाराज जी खड़े रहे सामने। मैं सुनाता हूँ हनुमान चालिसा। फिर आपश्री ने पूरा हनुमान चालिसा सुना दिया। संत बहुत प्रसन्न हुए। बलदेवपुरी जी महाराज ने कहा यह बालक विशेष है। पंडित जी ने पास बुलाकर हाथ देखकर माताजी को कहा कि आपका बेटा या तो राजा होगा या सन्यासी। इनके हाथ की रेखाएं विशेष है।

ठाकुरजी की लीला अपरम्पार है। ऐसे तो कहते हैं कि ठाकुरजी कुछ नहीं करते सब उनकी माया करती है या जीव के कर्मो के अनुसार विधान से सब घटित होता है, लेकिन ठाकुरजी जब जैसा चाहते हैं वे वैसा किसी भी प्राणी से करवा सकते हैं। ठाकुर जी ने अपने विशेष कार्य से अपने सखा को भेजा है तो सार सम्भाल भी वे ही लेंगे। एक दिन गोधूली वेला में गाँव के गोपिका तालाब पर श्री गोपाल कृष्ण मिले, उनसे मन की मित्रता हो गई वे मन को साथ लेकर चले गए तब अचानक हृदय अत्यंत व्याकुल होने लगा और खाना-पीना-सोना अच्छा नहीं लगता था। हृदय एक ही पुकार करता कि ठाकुरजी कब आओगे? ऐसी स्थिति में आपकी पूज्या माताजी आपश्री को ननिहाल लेकर गई। वहाँ पर श्री मगारामजी महाराज जो आपके नानाजी थे मिले तो उनको प्रणाम किया। वे उच्च कोटि के गृहस्थ संत थे। उन्होंने आपकी स्थिति देखकर तत्काल यज्ञोपवित संस्कार कराने का निश्चय किया। होलिका उत्सव चल रहा था, इसलिए अपने पास ननियाल में आपश्री को रख लिया।

दो माह पर्यन्त पूज्य नानाजी के सानिध्य में गीताजी का पाठ करते व्यतीत हो गये। वैशाख महिना आने पर अपने साथ हरिद्वार ले गए। नौ वर्ष की आयु में गीता भवन स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में शास्त्रोक्त विधि से यज्ञोपवित संस्कार संपन्न कराया। आपश्री के नानाजी तथा पुरोहित ने वेदाध्ययन का आशीर्वाद प्रदान किया। उसके बाद पूरी गर्मियों के समय गीता भवन गंगा तट पर निवास करते हुए संध या वन्दन, गायत्री जप करते रहे। आषाढ माह में श्री नानाजी के साथ पुनः जन्म भूमि आए परन्तु अब द्विज संस्कार होने से नादज (अध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले) हो गये थे। घर में निरन्तर गायत्री जप, श्री हनुमान चालीसा एवं श्री मद्‌भगवद गीताजी का पाठ करते और गोसेवा में सहभागिता निभाते हुए आपको ऐसा लगने लगा कि कुछ भूल रहे हैं, कोई अपना बिछुड़ गया है। यह जन्म क्यों हुआ है? आगे कहाँ जाना है? इस जीवन में क्या करना है? वेदाध यन करने काशी जाना चाहिए? इस तरह के विचारों में समय व्यतीत हो रहा था।

एक रात जब आपश्री खेत की रखवाली हेतु झाड़ियों में चद्दर ओढकर सो रहे थे तो प्रथम पहर में हनुमानजी ने आकर चद्दर खींची और कहा यहाँ क्या कर रहा है, चला जा यहाँ से। चद्दर हटाकर देखते तो कोई नहीं। फिर ओढ़कर सोते तो फिर चद्दर खींचते। आखिर हनुमान जी के दर्शन हुए तथा चौथे पहर में दिव्य शक्ति की प्रेरणा से बिना कुछ बोले माताजी को प्रणाम करके एक पारिवारिक महिला से पथ व्यय प्राप्त कर अज्ञात जगह की ओर प्रस्थान कर लिया। जन्मभूमि के गांव से पैदल ही सांचोर नगर में निवासरत कुल पुरोहितजी के घर पहुँच गए। उस रात विश्राम वहीं हुआ।

प्रात:काल काशी विद्याध्ययन हेतू पुरोहितजी को मुहुर्त बताने का निवेदन किया परन्तु उन्होंने पिताजी अथवा नानाजी जी की आज्ञा लेकर जाने का निर्देश दिया। उसी दिन कुल पुरोहितजी के निवास से प्रस्थान कर लिया और कच्छ-भुज क्षेत्र में स्थित कुल देवी श्री आशापुरा माताजी के दर्शन और उनकी आज्ञा प्राप्त करने के लिए विभिन्न वाहनों द्वारा तीन दिन में माताजी के मढ़ पहुंच गए। कुल देवी श्री आशापुरा माताजी के दर्शन करते ही माँ की गोद का अनुभव किया। वहाँ मन्दिर परिसर में माँ के सामने एक बरामदे के अन्दर आसन लगाकर गायत्री मंत्र का जप आरंभ कर दिया। प्रतिदिन दूर कुण्ड में दोनों समय स्नान करके पुन: जप यज्ञ चलता था और मन्दिर के पुजारी जी द्वारा दिया गया प्रसाद आहार के रूप में ग्रहण करते थे।

यह अनुष्ठान महिनों पर्यन्त चलता रहा। शारदीय नवरात्र अनुष्ठान के समय कुलदेवी श्री आशापुरा माताजी के स्वप्न दर्शन हुए तदुपरान्त माँ की प्रेरणा से पुष्करजी, वृन्दावन, हरिद्वार आदि तीर्थ दर्शन करने हेतु वहाँ से प्रस्थान किया।

श्री आशापुरी माता नो मढ़, जिला-कच्छ भुज

(श्री आशापुरी माताजी मंदिर का परिचय- श्री आशापुरा माता को कच्छ की कुलदेवी माना जाता है और बड़ी संख्या में राजस्थान और गुजरात के लोगों की उनमें आस्था है। श्री आशापुरा माताजी को चौहान, जड़ेजा व अन्य कई समुदायों की कुलदेवी माना जाता है। गुजरात में श्री आशापुरा का मंदिर कच्छ जिले के गाँव 'माता नो मढ़' भुज से 95 किमी दूर लखपत तहसील में स्थित है। 14 वी शताब्दी में निर्मित श्री आशापुरा माता का मंदिर जड़ेजा राजपूतों की प्रमुख कुलदेवी श्री आशापुरा माता को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण जड़ेजा साम्राज्य के शासनकाल के दौरान किया गया था। श्री आशापुरा माता को अन्नपूर्णा माता का अवतार माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि श्री आशापुरी माँ से जो भी आशा की जाती है वो पूरी होती है। श्री आशापुरा की मूर्ति की विशेषता यह है कि इनकी 7 जोड़ी आंखें होती है।)

प्रथम कर्णावती में श्यामजी, शिवरामजी व रायचन्दजी के पास रहकर वहाँ से विजय करके सर्वप्रथम पुष्करजी श्री ब्रह्माजी भगवान के दर्शन किए। कुछ दिन राजपुरोहित धर्मशाला में निवास किया। वहाँ से विजय कर वृन्दावन पहुँच गए। श्री यमुनाजी में स्नान तथा भगवान बांके बिहारी जी के दर्शनोपरांत एक पखवाड़ा तक कलाधारी बगीची में निवास किया। इधर से एक साधु महाराज के साथ हरिद्वार गए। त्रिलोक पावनी माँ गंगा जी के दर्शन स्नान करते हुए कनखल हरिद्वार ऋषिकेश तथा स्वर्गाश्रम में लम्बे समय तक निवास किया। अनेक संत महात्माओं के सानिध्य का लाभ प्राप्त हुआ।

एक वर्ष से अधिक समय पश्चात पुन: श्राद्ध पक्ष में महाराज जी पुष्कर जी आये। जगतपिता ब्रह्माजी के दर्शन करके पर्वत पर विराजमान माँ सावित्री के दर्शन किये। उस दिन रात्रिकालीन विश्राम वहीं पर कर लिया। चौथे पहर आकाशवाणी हुई कि यहाँ से दो योजन दूरी पर मार्कण्डेय जी ऋषि की तपोभमि गौरी कुण्ड नामक स्थान है। प्रात:काल वहाँ चले जाना, उधर शारदीय नवरात्र अनुष्ठान पश्चात आगे का मार्गदर्शन मिलेगा। महाराज जी ने

इसको माँ की आज्ञा मानकर प्रात:काल नित्य नियम उपरांत वहाँ से पूछताछ करते हुए अजयपाल व आबा गांव से पदयात्रा पूर्वक गोधूली वेला में श्री मार्कण्डेय जी की तपोभूमी गौरीकुण्ड पहुँच गए।

यहाँ पर्वत पर गुफा में स्वयंभू माँ की पिण्डी विराजमान है। माँ के श्री विग्रह के उत्तर दिशा में गहरा कुण्ड है, उसमे निर्मल जल भरा हुआ है। गौरी माँ की अपनी छोटी गोशाला है जिसमें 20 से अधिक वेदलक्षणा गोवंश विद्यमान था। (गौरीकुण्ड का परिचय- अजमेर जिले में ब्यावर से 40 किमी दूर सराधना के पास मकरेड़ा गांव में स्थित है यह मंदिर अरावली पर्वत श्रृंखला में एक पहाड़ी पर बना हुआ है। मान्यता है कि यह स्थान देवी गौरी माता पार्वती की तपस्थली है यहाँ ऋषि मार्कंडेय जी ने भी तपस्या की थी और माता गौरी ने उन्हें दर्शन दिए थे।

मान्यता के अनुसार माता गौरी ने भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए यहीं पर 3000 वर्ष तक तपस्या की थी। हजारों साल पहले माता पार्वतीजी की प्रतिमा यहाँ स्वयं प्रकट हुई थी। आज भी वह प्रतिमा पहाड़ी में बनी गुफा में विराजित है। उसी काल का यहाँ एक चमत्कारिक कुण्ड विद्यमान है जिसे गौरीकुंड कहा जाता है। जिसका जल कांच की तरह निर्मल रहता है तथा आज तक नहीं सूखा। इस कुंड के जल को पवित्र और माता के चमत्कार से जोड़कर देखा जाता है। कहा जाता है कि इस कुंड का पानी सर्दियों में गर्म और गर्मियों में ठंडा रहता है। मान्यता है कि माँ गौरी ने अपने हाथ के कड़े से इसे बनाया था और तपस्या के दौरान इसी कुण्ड में स्नान करती थी। यह मंदिर भक्तों के लिए धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है भक्त यहाँ संतान सुख शांति और परिवार की खुशहाली के लिए प्रार्थना करते हैं। यहाँ पर नवरात्रि के समय यहाँ भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है)

यहाँ पर महंत भोलादास जी महाराज मिले। उन्होंने अत्यंत स्नेह सहित शारदीय नवरात्र अनुष्ठान की अनुमति प्रदान कर दी। नवरात्र में महाराज-केवल जल पर रहकर पूरे दिन गायत्री जप और रात को पंचाक्षर जप करते थे। इस तरह दशहरा आ गया तब महंत श्री भोलादास जी ने कहा कि अब नवरात्र का पारणा कर लीजिए, परंतु महाराज जी ने एकादशी तक उपवास रखने का संकल्प बताया तो मान गए। द्वादशी को गोदुग्ध की खीर का प्रसाद लेकर नवरात्र व्रत का पालना कर दिया। महंत श्री भोलादास जी के आग्रह से इसी पावन स्थल पर लम्बे समय पर्यन्त मन्दिर में बने एक गुफानुमे कमरे में आसन लगा दिया और नित्य नियम पूर्वक गोसेवा करते हुए सतगुरु दर्शन हेतु व्याकुलता पूर्वक जप ध्यान आदि अनुष्ठान चलता रहा।

एक दिन शुक्ल पक्ष की रात्रि को मन्दिर प्रांगण में महंत श्री भोलादास जी व पंडित गंगाधर जी के पास बैठे-बैठे जप करते समय अचानक खुले नेत्रों से देखते हुए शीश पर साक्षात् पिता महा भगवान ब्रह्माजी का कर कमल फिर ....शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

एक बार किसी ने उनके चरणों में प्रणाम कर लिया तो सोचते हैं कि इसे क्या दें। आप लोग कहेंगे हम तो रोज ही करते हैं। पंचांग, साष्टांग अथवा जैसा बनता है वैसा करते हैं। फिर आप एक प्रणाम की क्यों कहते हैं? यथार्थ में हम नमस्कार की, प्रणाम की क्रिया तो करते हैं पर वस्तुतः प्रणाम नहीं कर पाते हैं। प्रणाम माने क्या है? प्रणाम का अर्थ है प्रणम्य पर अपने आपको न्योछावर कर देना। इसलिए वस्तुतः सच्चा प्रणाम आत्म निवेदन ही है। क्या है आत्म निवेदन? नवधा भक्ति में कौन सी भक्ति है आत्म निवेदन? प्रहलाद जी कहते हैं।

श्रवणं कीर्तनम् विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनम वंदनम दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।
इति पुंसार्पिता विष्णै भक्तिश्चेन्नवलक्षणा।
क्रियेत भगवत्यद्धा तन्मन्येऽधतमुत्तमम।।

यह है वास्तविक प्रणाम। विभिषण जी ने कितनी बार प्रणाम किया? आप लोग सब मानस प्रेमी बैठे हैं, कितनी बार प्रणाम किया विभिषण जी ने? एक बार!

श्रवण सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर।।
अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा।
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भय हारी।
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।

मैं कानों से आपका सुयश सुनकर आया हूँ कि प्रभु भव (जन्म-मरण) के भय का नाश करने वाले हैं। हे दुखियों के दुःख दूर करने वाले और शरणागत को सुख देने वाले श्री रघुवीर! मेरी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए!

प्रभु ने उन्हें ऐसा कहकर दंडवत् करते देखा तो वे अत्यंत हर्षित होकर तुरंत उठे। विभीषणजी के दीन वचन सुनने पर प्रभु के मन को बहुत ही भाए। उन्होंने अपनी विशाल भुजाओं से पकड़कर उनको हृदय से लगा लिया।

छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित गले मिलकर उनको अपने पास बैठाकर श्री रामजी भक्तों के भय को हरने वाले वचन बोले- हे लंकेश! परिवार सहित अपनी कुशल कहो। तुम्हारा निवास बुरी जगह पर है।

यह है प्रणाम का फल। बस ठाकुरजी को प्रणाम करना आ जाय। कोई एक बार इनके चरणों में प्रणत हो जाय तो ठाकुरजी सोचते हैं इनको क्या दे दें? क्या दे दें? क्या दे दें? अब जो प्रणत है वह चाहता हो तब ना दें, वह तो चाहता ही नहीं। जब कोई चाहता है तब ना दिया जाए, वह चाहता नहीं है। तो ठाकुरजी सोचते हैं बिना दिये तो हमारा मान घटेगा। भाई लोग कहेंगे कि इनके दर्शन का क्या फल है? कुछ तो देना ही चाहिए इसको। तो ठाकुर जी कहते हैं तुम मोक्ष ले लो। बोले हमको यह भी नहीं चाहिए क्योंकि-

अरथ न धरम न काम रूचि, गति न चहउँ निरबाण।
जनम-जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

मुझे न अर्थ (धन-सम्पत्ति) की रूचि (इच्छा) है, न धर्म की, न काम की और न मैं मोक्ष ही चाहता हूँ। जन्म-जन्म मेरा श्री रामजी के चरणों में प्रेम हो बस यही वरदान मांगता हूँ, दूसरा कुछ नहीं।

तो भगवान बोले हम तुम्हें मुक्त नहीं कर रहे हैं, कुछ ना कुछ दिए बिना हमको संतोष है नहीं हमको देने से संतोष होगा, इसलिए मेरी प्रसन्नता के लिए, मेरे संतोष के लिए तुम ले लो। बोले आपकी प्रसन्नता के लिये हम सब कुछ करने के लिए तैयार हैं। तो बिल्वमंगल जी कहते हैं- 'हस्तन्यस्तनतापवर्गम अखिलोदारं किशोराकृति' एक बार जिसने प्रणाम कर दिया उसकी हथेली पर अपवर्ग माने मोक्ष रख देते हैं।

अपवर्ग माने क्या होता है? अपवर्ग माने मोक्ष होता है। अपवर्ग का अर्थ क्या है? जिसमें पवर्ग न हो। प वर्ग में प, फ, ब, भ, म ये 5 अक्षर न हो वह अपवर्ग कहलाता है। 'प' पाप नहीं है वहाँ, पाप का लेश भी नहीं है वहाँ, तभी पूर्ण निष्पाप होगा। दूसरा 'फ' से फलासक्ति का त्याग। कर्तव्य बुद्धि से कर्म करता है पर कोई फल की इच्छा नहीं। तीसरा 'ब' से बुराई से रहित है। 'भ' यानि कि भय रहित और पांचवा 'म' से मृत्यु से रहित है, फिर बार-बार मरना नहीं पड़ेगा। इसी को कहते हैं अपवर्ग।

ऐसा है मोक्ष और उस मोक्ष को भगवान प्रणाम करने वाले वैष्णव की हथेली पर रख देते है। हथेली पर रखने का अर्थ समझे कि नहीं समझे? जिसकी हथेली पर रखा वो तो मुक्त हो ही गया, अब मोक्ष उसकी सम्पत्ति हो गई, मोक्ष उसकी हथेली पर है। वो उसमें से जितनों को देकर मुक्त करना चाहे उतनों को मुक्त कर सकता है। यह विलक्षण सामर्थ्य भगवान शरणागत भक्त को देते है। वो स्वयं तो जीवनमुक्त हो ही जाता है, वो जिस-जिस जीव के लिये संकल्प करता है वे भी सब मुक्त हो जाते है। वो जितने लोगों को मोक्ष देना चाहे उतनों को मोक्ष दे सकता है।

आपको हो सकता है हमारी बात पर विश्वास न हो, उससे हमारी कोई हानि नहीं, पर हम यह निवेदन कर रहे हैं कि पापी से पापी व्यक्ति के ऊपर मृत्यु के समय यदि किसी एक शरणागत प्रेमीभक्त की, संत की, महापुरुष की दृष्टि पड़ जाए भले ही उसने जीवन में कोई साधन न किया हो, हजारों हजारों दुष्कर्म उसने किये हो, कोई ऐसा निषिद्ध कर्म नहीं हो जो उसने न किया हो, महापातकी हो किंतु घुणाक्षर न्याय (घुणाक्षर न्याय का अर्थ है किसी अनपेक्षित और अज्ञात कार्य का संयोगवश, बिना किसी प्रयास के घटित हो जाना) से मृत्यु के क्षण में कोई भक्त, कोई सत्पुरुष, कोई संत पहुँच जाए और उनकी दया भरी दृष्टि उस मरणधर्मा जीव पर पड़ गई तो संपूर्ण पापों से मुक्त होकर मोक्ष का अधिकारी हो जायेगा। अब साधन तो उसने किया नहीं कोई फिर भी वह मोक्ष का अधिकारी हो गया। अब यहाँ से आगे और सुनिये। मरते समय किसी भगवत प्राप्त महापुरुष की दृष्टि नहीं पड़ी, मर गया और अंतिम यात्रा जा रही थी, राम नाम सत्य है, गोपाल नाम सत्य है, सत्य बोलो सत्य है, राम राम सत्य है, राम नाम सुना तो किसी संत की दृष्टि पड़ी, उसके रोमांस हुआ कि भैया मेरे प्रभु का नाम किधर से आ रहा है, तो देखा कि भीड़ जा रही है, मुर्दा जा रहा है अर्थी जा रही है उसे अर्थी पर, मृत देह पर यदि दृष्टि पड़ गई तो भी वह सर्वसाधारण शून्य होने पर भी मोक्ष का अधिकारी हो जायेगा।

यहाँ से आगे और सुनिए- मरते समय नहीं दर्शन हुआ, चिता जल रही थी किसी नदी के किनारे अथवा किसी सरोवर के किनारे, सौभाग्य से इस समय कोई संत स्नान संध्या के लिए वहाँ चले गए और उनकी नजर जलती चिता पर पड़ गई बस इतने से ही उसका काम हो जायेगा, वो जीव मुक्त हो जायेगा। आप लो कहेंगे इतनी सस्ती चीज है मोक्ष? हाँ मोक्ष इतना सस्ता है। 'हस्तन्यस्तनतापवर्गम हथेली पर मोक्ष रख देते हैं ठाकुरजी, अखिलोदारं किशोराकृति' बस शर्त है कि संत हो, केवल हमारे जैसा भेष मात्रा वाला ना हो। वस्तुत भगवान का भक्त हो, प्रेमी हो अनुरागी हो, उसकी दृष्टि पड़ जाए बस काम बन गया।

यही अर्थ है हस्तन्यस्तनतापवर्ग, यही है अखिलोदारत्व और अंतिम शब्द क्या है? अंतिम शब्द है- किशोराकृति। उस वस्तु की आकृति कैसी है? किशोर। किशोर माने सदा 16 वर्ष की आयु में ठाकुरजी रहते हैं। आप हमारी बात पर भरोसा करो, 16800 व्याह हो गये, 10-10 लाला, 1-1 लाली हो गई तब भी द्वारिकाधीश 16 वर्ष के ही रहे। दिनेश जी, नाती-पोते तो बुढ़े हो गये पर ठाकुरजी 16 वर्ष

के ही रहे। क्यों? क्योंकि- किशोराकृति।

हमारे श्री रघुनाथजी श्रीमद्भागवत के अनुसार 13 हजार और श्रीमद् वाल्मीकि रामायण के अनुसार 11 हजार वर्ष तक अपनी प्रकट लीला में विराजते हैं। राम जी की उम्र कितनी रहती है? बोलो कितनी उम्र रहती है? जिस समय राम जी का वनवास हुआ है उस समय राम जी की आयु कितनी थी? विवाह के समय रामजी की 15 वर्ष की आयु हुई। 12 वर्ष विवाह के बाद अयोध्या में रहे। तो बताओ वनवास के समय कितने वर्ष के हुए, 27 वर्ष के। 27 वर्ष की आयु में राम जी की वनवास लीला हुई।

विवाह के समय जानकी जी कितनी बड़ी है विवाह के समय जानकी जी माताजी 6 साल की है। कितनी बड़ी है 6 साल की। विश्वास करो, विश्वास करो वाल्मीकि रामायण में लिखा है।जब वे 4 वर्ष की थी तब तो उन्होंने वह शिवजी का प्रचंड धनुष पिनाका जिसे रावण, बाणासुर तिल भी न हिला सके उस धनुष को किशोरीजी ने 4 साल की थी तब बाएं हाथ से उठा दिया, नीचे का कपड़ा बदल दिया सजावट कर दिया और बढ़िया परिष्कार कर दिया पूरे स्थल का। जनक जी प्रणाम करके बोले- यह तो पुरखों के जमाने का था कोई हिला तो सकता ही नहीं, यह किसने कर दिया? बोले लाली आई थी आज फूल तुलसी चढ़ाने, बिलपत्र चढ़ाने, जानकी जी ने किया है। तभी तो प्रतिज्ञा की उन्होंने कि जो इस धनुष को तौड़ेगा उसी के साथ जानकी का विवाह होगा।

6 साल की है जानकी, खुश है। इतना लाड है, इतना लाड है मैया बाबा का 6 साल में भी सयानी सी लगती है, 12 वर्ष की सी लगती है। कितनी लगती है? 6 साल की लगती 12 साल के जैसी और यह जानकी जी की शाश्वत अवस्था सदा द्वादश ही रहती है। श्री राधा रानी भी सदा द्वादश वर्षीय रहती है और श्री जानकी जी भी सदैव द्वादश वर्षीय रहती है। दशरथ जी कहते हैं- मेरे कमल नयन राम अभी 16 साल के नहीं हुए हैं। 16 में से एक कम है माने 15 वर्ष के हुए हैं। रामजी आज तक 16 के नहीं हुए हैं। 13000 वर्ष तक गद्दी पर बैठने के बाद भी पूरे 16 के नहीं हुए। हमारे श्री कृष्णा भी अभी 16 के नहीं हुए क्योंकि नित्यम किशोराकृति।

बताइये किशोर आकृति का क्या मतलब है? किशोर आकृति का मतलब है लगते किशोर, पर हैं नहीं किशोर। समझे कि नहीं समझे? बहुत भले घर के बच्चे होते हैं, उम्र कम होती है, पर किसी-किसी का शरीर ऐसा होता है कि छोटी उम्र में भी बड़े जैसे दिखने लग जाते हैं। बड़े तो नहीं हुए पर दिखते बड़े जैसे। महाभारत के युद्ध में सबके दांत खट्टे कर देने वाला अतिरथी महावीर अभिमन्यु मात्र 16 वर्ष की उम्र थी उनकी। अवस्था तो किशोर थी, आकृति किशोर थी, पर पुरुषार्थ ऐसा था कि संपूर्ण महाभारत युद्ध में जो पराक्रम अभिमन्यु ने दिखाया है वह किसी ने नहीं दिखाया। अवस्था और पराक्रम की दृष्टि से देखा जाय तो भीम, अर्जुन, कर्ण, पितामह सब पीदे रह गये। अद्भुत है। यहां है किशोर आकृति।

अधिक से अधिक, अधिक से अधिक वैसे तो 11 वर्ष कुछ महीने और कुछ दिन ठाकुर जी ने ब्रज लीला की पर मोटा-मोटी समझ लो 11 वर्ष, कितने वर्ष 11 वर्ष तक की ब्रज लीला है लेकिन यहाँ भी विलक्षण बात है ठाकुर जी का 11 वर्ष की आयु में ही पौगण्ड में कुमार प्रकट हो जाता है। शैशव में पौगण्ड प्रकट हो गया और कुमार में किशोर प्रकट हो गया। कहते हैं छठे वर्ष की आयु में जब बालक प्रवेश करता है तो उस अवस्था का नाम है पौगंड। क्या नाम है पौंगण्ड।

भगवान श्री कृष्ण ने छठे वर्ष की आयु में प्रवेश किया। 5 साल के पूरे हो गए। छठे वर्ष की आयु में प्रवेश किया पर हमारा 6 वर्ष को लाला ऐसा दिखे मानो 16 वर्ष को किशोर भया। बाबा को लाडलो फिर गोपी को ......शेष अगले अंक मे

भक्त चरित्र

बहुत ही रहस्यमयी संत श्री हरे राम बाबा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

दो की परीक्षा नहीं करना चाहिये। ना भगवान की परीक्षा और ना भगवान के प्राण प्यारे भक्तों की परीक्षा। भगवान की परीक्षा सती जी ने की क्या दशा हुई? भगवान की परीक्षा जयंत ने की क्या दशा हुई? परीक्षक परीक्षार्थी से श्रेष्ठ होता है भगवान से श्रेष्ठ कौन है बोलो? तो भगवान की परीक्षा कौन लेगा बोलो? भगवान के भक्त की परीक्षा इसलिये नहीं लेना चाहिये क्योंकि परीक्षा जब ली जाएगी तो भक्त का अपराध बनेगा और भगवान अपने अपराध को भले ही क्षमा कर दें पर भक्त अपराध को भगवान क्षमा करते नहीं। आपकी भावना कम हो गई हो तो दूर हो जाओ, पर आप परीक्षा मत लो। परीक्षा लेकर सेवा सम्भव नहीं है।

दो बातें हैं संत की परीक्षा में- कोई संत है और उसे पता चल गया कि अमुक व्यक्ति हमारी परीक्षा ले रहा है, उसको मान-बड़ाई, पद प्रतिष्ठा तो चाहिए नहीं, तो वह जानबूझ कर परीक्षा में फेल होगा। वह ऐसा काम करेगा कि आप समझ लोगे कि यह साधु है ही नहीं। उनको तो कुछ मान-बड़ाई आपसे चाहिये नहीं इसलिये वो तो प्रमाणित कर देंगे कि साधु है ही नहीं और जो नकली लोग हैं वे कोई इतना बढ़िया अभिनय करेंगे, साधुता उनमें बिल्कुल भी नहीं। न जीवन पवित्र, न आचरण पवित्र, न व्यवहार पवित्र, कुछ नहीं है, दम्भी है, पाखण्डी है पर इतना बढ़िया नाटक करेंगे कि आप कहेंगे कि इनसे बड़ा संत कोई हो ही नहीं सकता। तो संत तो असंत प्रमाणित हो जायेंगे और असंत संत हो जाएंगे। आप ठगाए आयेंगे, ऐसा ही तो रहा है।

संत होते कैसे हैं जानते हैं आप? हमारे महाराज जी के निकट एक संत रहते थे हरे राम बाबा। 104 वर्ष की आयु में भगवत धाम गए और बड़े उच्च कोटि के भगवत भक्त थे। उनकी कुछ रचना भी है उसको महाराज जी ने प्रकाशित किया 'करूण पुकार' नाम से। बहुत अच्छे-अच्छे पद हैं, प्रेम में भरे हुए पद हैं। महाराज जी का आग्रह था कि एक संत के प्रेम और विरह से भरे हुए उद्गार हैं तो उनकी आज्ञा लेकर उनके जीवनकाल में ही महाराज जी ने प्रकाशित कर दिया। उनको कई बार भगवान के प्रत्यक्ष दर्शन हुए, हरे राम बाबा को, कई बार। बहुत अच्छे महात्मा थे, हम तो उनके निकट रहे तो कई बार उनको अनुभव किया, पर बाहर का व्यवहार ऐसा था कि आप श्रद्धा नहीं कर सकते कि ये महात्मा हैं। उनकी अवस्था बहुत उन्नत थी, बहुत ऊंची अवस्था थी।

अब एक बात हम आपको बताएं, सब सुनने के अधिकारी नहीं होते हैं पर दो-चार लोग भी सुनने के अधिकारी हो तो उनके लिए हम यह बात कह रहे हैं। हमको उनके साथ सोने का अवसर मिलता था। वे महाराज जी का संग चाहते थे और महाराज जी के कमरे में उतनी जगह नहीं थी पुस्तकालय में तो हम जहाँ सोते थे वहाँ हरे राम बाबा भी सो जाते थे। तब बाबा चलते-फिरते थे, तब उनकी टांग नहीं टूटी थी। तो वहीं बाबा सोते और हम भी वहीं सोते। महाराज जी कहीं बाहर चले जाते तो भी वे वहीं सोते। तो इतनी सी जगह में हम दोनों सोते। हम बालक थे और वे वृद्ध थे तो सो जाते। हमको यह भी विवेक नहीं रहता कि इतने बड़े महापुरुष के संग कैसे सोएं, पर बालक थे जो सो जाते।

एक घटना का नमूना बता रहे हैं आपको, बाकी घटनाएं तो बहुत थी। एक रात्री को सो रहे थे। हमको एक स्वप्न हुआ उसको देखकर हम डर गये। तो रात्रि का समय था और हमको एक सपना हुआ स्वप्न को देखकर हम बहुत डर गए। स्वप्न में क्या

दिखाई पड़ा- विशाल पर्वताकार हनुमान जी हैं, इतने बड़े-बड़े उनके रोएं हैं, एकदम तपे हुए स्वर्ण के समान रूपावली है उनकी। मणियों से जड़ित आभूषण हैं उनके। इतना विशाल शरीर है फिर भी परम सुंदर हनुमान जी दिख रहे हैं और कीर्तन कर रहे हैं। वह इतनी विशाल आकृति हनुमानजी के देखकर हम डर गए। हमको पसीना-पसीना हो गया। तो बाबा हमारे बगल में लेटे हुए थे। वे हमारी छाती पर हाथ फिराने लगे और जय सियाराम, जय जय हनुमान, संकट मोचन कृपानिधान। रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिये बोलने लगे।

उन्होंने क्या कहा- बच्चा डरना नहीं। मैं निरंतर भगवान रामनाम का जप करता हूँ इसलिए हनुमान जी मेरे सामने निरंतर रहते हैं। आज तुम्हें हनुमान जी की झलक मिल गई है। तुम डरना नहीं हनुमान जी तो भक्तों की रक्षा करते हैं। साधु संत के तुम रखवारे असुर निकंदन राम दुलारे। हमने बताया नहीं कि हमको क्या स्वप्न आया। वे बोले डरो मत सो जाओ। यह उनके शरीर को छूने की महिमा थी। अब आप विचार करो कैसा उनका दिव्य प्रभाव था। इतनी विलक्षण-विलक्षण बातें उनके जीवन की कि हम कह नहीं सकते। हर आदमी विश्वास ही नहीं करेगा। ऐसे महात्मा थे।

जब महाराज जी ने उनकी करूण पुकार नाम से पुस्तक छपवाई तो उसको पढ़कर दिल्ली की माताजी आई उनको बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने बताया कि यह पुस्तक लिखी वो महात्मा कहाँ हैं हमको दर्शन करने हैं। हमने कहा महातमा तो यहीं हैं, उनकी टांग टूट गई है तो अब चल फिर नहीं सकते, हम लोग सेवा करते हैं उनकी। हमने उनको खूब महिमा सुनाई कि महात्मा जी बड़े भजनानंदी सिद्ध संत हैं। वह इतना सारा सेव लेकर आई थी तो बाबा को दिया, 50 रुपये भी भेंट किये। बाबा बोले कहाँ से आई है? क्या नाम है? दिल्ली से आई हूँ और उसने अपना नाम वगेरह बताए। क्या काम करती है? उसने सब बताए। बोली मेरे पिताजी पधार गए थे ऐसे-ऐसे मैं तो माँ का मैंने सहयोग किया। अब मैं जॉब करती हूँ। क्या होता है जॉब? नौकरी करती हूँ। भाई की शादी हो गई, बहनों की शादी हो गई है अब तो बाबा मैं थोड़े दिन की बात है मैं तो भजन ही करूंगी। उसने जब अपनी चर्चा, सब बात बता दी तो बाबा हाथ जोड़कर क्या कहते हैं कि देवी मैं तो बुड्ढा हो गया हूँ, अब विवाह के लायक हूँ नहीं तो तुम दूसरी जगह चली जाओ।

अब कोई नये भक्त दर्शन करने आवे और प्रथम बार किसी लड़की से ऐसे बात करें तो उसको कितना खराब लगेगा? महाराज जी हम तो साधु समझकर आपके पास आये, आप तो ऐसे बोल रहे हैं। किसने कहा तुम्हें कि में साधु हूँ? मैं साधु नहीं हूँ मैं गुंडा हूँ गुंडा, मैं दुष्ट हूँ, साधु नहीं हूँ। आपको गलतफहमी हुई है जो मुझे साधु समझ रही हो। उसने तो सेव वापिस ले लिये, महाराज जी ने 50 रुपये भी दे दिये उसे। वो दुःखी होकर चली गई।

उसके जाने के बाद हम लोगों ने कहा महाराज हम लोग फल और मिठाई के लिये तरस जाते हैं, जैसे-तैसे एक भक्तानी आई थी, उसको भी आपने भगा दिया। फल मिठाई भगवान की सेवा में लगता। बच्चा इस माया से भगवान बचावे। मैंने जीवन भर धन और स्त्री के आकर्षण से अपने को बचाया है। मैंने भजन किया है अब मैं वृद्ध हो गया हूँ लेकिन हमारे निकट रहने वाले वृद्ध नहीं है। नये साधकों के बीच में स्त्रियों का आना-जाना अच्छा नहीं है। इसलिए मैंने एक बार में ही फंस काट दी, दुबारा नहीं आएगी। हमने कहा बाबा कहीं वह श्रद्धा करके पापिस आ गई तो, बोले गाली दूंगा अबकी बार गाली दूंगा। हम तो मुँह लगे थे, हमने कहा कि बाबा वह गाली खाकर तीसरी बार फिर आ गई तो, तो बोले डंडा मारूंगा। हमने कहा महाराज जी डंडा खाकर भी फिर आ गई तो, तो बोले मैं बताऊंगा कन्हैया कैसे मिलते हैं, श्री कृष्ण का दर्शन कैसे होता मैं बताऊंगा। आप कैसे पहचानोगे महात्मा को। इसलिये संत की परीक्षा मत करो

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।
रसहीन गिराती सिर धुनती, उसका उचटा जी मना गया।
कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।

यह कागज का पाना नहीं है, तुलसी पत्र है तुलसी का दल है। आप प्रसाद लाख प्रकार के भगवान को चढ़ावें बिना तुलसीदल चढ़ाये भोग नहीं लगता, ऐसे ही वक्ता रंग बिरंगे शास्त्रों के मर्म का वाचन करें, पर तुलसी मानस की चौपाई न गाएं तो वो कथा भगवान को समर्पित नहीं होती। इसी प्रकार वेद पुराणों की कथा पर तुलसीकृत रामचरितमानस की चौपाई चढ़ा नहीं देते तब तक भगवान को भोग नहीं लगता।

कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।

यह भारती, यह शारदा यह सरस्वती सूख गई थी। इनको भी विनोद के लिये साधन नहीं रह गया था, इनको भी रस में डूबने का मौका नहीं मिल रहा था। बाबा तुलसी ने रसहीन शारदा के जीव्हा को सरस कर दिया मानस का रसगान करके।

सामान्य रसों से परे दिव्य रसों का रहस्य कुछ सुना गया।
कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।
कविता मंजरी पनपी उससे यह मानस सलिल सुधा कृपया।
कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।

यह कविता मंजरी ऐसी पनपी कि उससे पूर्ण मानवीय एक रसधारा का प्रवाह बहा दिया। तुलसी बाबा का जीवन कैसा है?

वह राम भक्ति का भूखा था पर अघा गया श्रीमंतों को।

आप तो भूखा रहा पर श्रीमनों को अघा दिया, तृप्त कर दिया मानस की प्रसादी से।

वह राम भक्ति का भूखा था पर अघा गया श्रीमंतों को।
पेय पुण्य प्रेम का पिला गया नर नारी संत असंतों को।

संत भी पी रहे हैं, असंत भी पी रहे हैं और नर भी पी रहे हैं, नारियों भी पी रही हैं।

कुछ भाव गजब का भर गया आतुर उर में नया-नया।
कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।

चलिए वहाँ जहाँ मानस का अवतरण हुआ। वह काल भारत का मरण अवस्था था। म्रियमाण भारत की प्रजा जिसके पास अवलम्ब कुछ भी नहीं रहा, जिसके पास लौकिक-पारलौकिक उन्नति का कोई साधन ही नहीं रहा। कहीं वाणी खोलने के लिए उनके पास कोई साधन विशेष नहीं रहा। म्रियमाण भारतीय प्रजातियों को जीवन दान देने के लिए उन्होंने यह रस धारा प्रवाहित की और म्रियमाण प्रजा को नया विभु प्रदान कर दिया, स्वर्ग प्रदान कर दिया। मानस जी को समझा जाय यहाँ से।

हरि मूरत की भावनाओं के भेद से नर से नर लड़ जाते थे।
कलुषित कलहों के बीच नीच क्या पंडित भी पड़ जाते थे।

मूर्ख तो क्या विद्वान भी लड़ जाया करते थे। उनमें सम्प्रदायवाद का इतना जहर भर गया था कि कोई पीता कोई उगलता था। उस समय भारतीय मनुष्यों का हृदय उद्वेलित था।

कर सियाराम में सब जग को, वह हर विरोध कर गया छया।
कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।

सियाराम में भारत हो गया उस काल में। सब के विरोध मिट गए। सबका अंतःकरण शुद्ध हो गया। बाबा तुलसी क्या थे?

था भक्त सुधारक था कवि था ज्ञानी था परउपकारी था।
माता हिंदी के मंदिर का वह एक अनन्य पुजारी था

माता हिंदी की गोद भर दी, कोख भर दी, पेट भर दिया, अब तृप्ति कर दी। मानस से माँ हिंदी तृप्त हो गई है। उनका सारा वाचा सिद्ध हो गया। ऐसा अमर ग्रंथ, ऐसा अमर साधन हम जीवों को प्राप्त हुआ, सुलभ हुआ।

मृदु मानस कर सर्वत्र सुलभ, अक्षय प्रवाह वह बहा गया।
कागज के पन्ने को तुलसी तुलसीदल जैसा बना गया।

लोग कहते हैं, भविष्य पुराण में वर्णन है, मानस में संकेत है, बाबा वाल्मीकि जिन्होंने वाल्मीकि रामायण की रचना की वो तो आर्षकाल था हमारी वाणी संस्कृतनिष्ठ थी, जिनकी वाणियों में विकृति आई वो भगवत कृपा से प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे। गांव की गंवार भाषा प्राकृत भाषा थी। सम्भ्रातों की भाषा दिव्य भाषा संस्कृत थी। वैसे काल की अवस्था में हरि भक्तों उत्कृष्ट भारतीय संस्कृति उनको भगवान वाल्मीकि का वरदान मिला है लेकिन वाल्मीकि रामायण आत्मसात करने योग्य इसलिए नहीं रहा क्योंकि संस्कृत भाषा का ज्ञान धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है। केवल पूजा पाठ के लिये ग्रन्थों को रखा जाता है।

किंचित विदुष विद्वतजनों के हृदय में, उनकी मेधा में, उनकी वाणी में आज यह ज्ञान स्थित है अन्यथा भारत में इस परम्परा को लोगों ने अच्छा नहीं माना, आदर नहीं किया, स्वीकार नहीं किया अथवा पाने का प्रयास ही नहीं किया। अपनी धरोहर से ममता हट गई। कौड़ी करोड़ जो किसी काम का नहीं, हर हाल में छोड़ देना पड़ेगा पर उस बात में हमारी बुद्धि ऐसी स्थिर हो गई जिसके लिए हमारी जान जा रही है पर जिन आर्ष, जिन संपदा, जिन ग्रंथ जिन वैभव, जिन देव वाणी हमारे अमर कृतियों का आश्रय लेकर के बैकुंठ में भी ध्वज फहराया जा सकता था उनके प्रति सद्भाव रखने में भी हमारा मन इस समय संकुचित हो रहा है।

ऐसे में बाबा तुलसी ने मानस रस का प्रभाव बहाया तो वह वाल्मीकि भगवान धरती पर तुलसीदास जी के रूप में अवतरित हुए। आपको याद होगा काशि नगरी में जब उन्होंने संस्कृत में लेखन आरम्भ किया तो प्रतिदिन जितना लिखते उतना बन्दर के हनुमानजी रोज पानी में बहा देते। जितनी रचनाएं हुई और सबको पानी में बहा दिया गया तो तुलसी बाबा को लगा कि मेरे श्रम व्यर्थ जाते हैं, रात्रि काल में हनुमान जी प्रकट हुए और कहा-बाबा आप बताओ पूरी आबादी में कितने लोग हैं कि वाल्मीकि रामायण का परिचय है, नाम सुन लिया हो तो हो सकता है पर ज्ञान इस प्रकार से रखते हों, इसमें प्रवेश कर गए हो स्वाध्याय रखते हुए प्रतिशत में तो नहीं आ सकते। हम कहते हैं 1% वाल्मीकि रामायण पढ़ते हैं तो प्रतिशत में नहीं उतर पाएंगे।

बाबा ने पूछा- इसके लिए हमें क्या करना चाहिए? हिंदी में रचना करो। अवधि में गंवार भाषा गिरा ग्राम सियाराम की भाषा में, अवधि बोली में, गांव की बोली में बोलिए ताकि आम लोग भी आपके विज्ञान विषय को समझ सके या विज्ञान है यह विज्ञान है जिसमें आत्मा का दर्शन होता है परमात्मा का दर्शन होता है, परमात्मा की प्राप्ति होती है, इन दोनों तत्व से परिपूर्ण है मानस।

आप जानते हैं मानस के माध्यम से भारत कैसे जुड़ गया? आपका उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक चार टुकड़ों में भारत बंटा हुआ था। उत्तर वाले लोग दक्षिण जाने से घबराते थे कि लौटेंगे कि नहीं और दक्षिण वाले कभी उत्तर की यात्रा नहीं करते थे क्योंकि एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। ऐसे विकट काल में बाबा तुलसी ने मानस के माध्यम से सारा विष हरण कर लिया। मानस की उन पंक्तियों को याद करिये जिस समय भगवान श्री रामेश्वरम की स्थापना की जा रही थी। भगवान शिव जब समुद्र तट पर स्थापित किए गए तो बाबा तुलसी ने फलश्रुति लिखी-

जे रामेश्वर दर्शन करहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं।।

जो लोग रामेश्वर के दर्शन करेंगे, तन त्यागने पर उन्हें श्री सीतारामजी की सन्निधि होगी, वैकुण्ठ लोग की प्राप्ति होगी।

तो दक्षिण के लोग इतराने लगे कि भाई शिव

हमारे पास है और हम तर जायेंगे। तो बाबा तुलसी ने उत्तर वालों को भी एक मौका दिया है–

जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि। सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि।

देखो भाई शिवलिंग तो तुम्हें मिल गया पर गंगाजल तुम्हारे पास नहीं है और जो उत्तराखंड में जाकर भगवती गंगोत्री की प्रार्थना करके गंगाजल लाकर जो जीव चढ़ाएगा वो सायुज्य मुक्ति (ईश्वर में पूरी तरह विलीन हो जाना, जहाँ आत्मा और परमात्मा के बीच कोई भेद नहीं रह जाता है।) पायेगा। इस प्रकार का संबंध– दक्षिण वालों को उत्तर की जरूरत पड़ गई और उत्तर वालों को दक्षिण की जरूरत पड़ गई, और दोनों मिल गए। भारत का संयोजन बाबा तुलसी ने किया। बोलिये लोकनायक तुलसीदास जी महाराज की जय।

सज्जनों! यह मानस की रचना है, अद्‌भुत ग्रंथ है। हम क्या जानें, वो तो अमर वैभव लेकर आये थे। ऐसे बाबा तुलसी थे। सब मगन गरीब अमीर हुए। क्या रामायण पढ़ने का हक सब अमीरों को है? क्या गरीब नहीं पढ़ सकता? नहीं–नहीं झोपड़िया में भी, महलों में भी, टेंट में भी, जंगल झाड़ी और वन में भी मानस पढ़ा जाता है। सबको आबाद कर दिया बाबा ने। सबको अमीर कर दिया।

सब मगन गरीब अमीर हुए, उसके सुसुगन्धि निनादों में।
एक गान यह गूंज उठा, कुटियों में राज प्रसादों में।
पानी की रानी की वीना वो निज स्वर में गुनगुना गया।

मानो माँ शारदा जब प्रकट हुई और उन्होंने तुलसी के ग्रंथ का अनुमोदन किया तो तुलसी ने माँ शारदा से वीणा लेकर आप रस में ही गान कर दिया वो ही यह मानस है।

बंदउ तुलसी के चरण जिन्ह किन्हो जग काज।
कलि समुन्द्र बूढ़त लख्यो प्रकटयो सप्त जहाज।।

ऐसे तुलसीदास जी महाराज को प्रणाम है जिन्होंने घोर कलिकाल रूपी समुन्द्र को पार करने के लिये हम सबको रामचरितमानस रूपी सप्त जहाज प्रदान किये। मानस को सात जहाज इसलिये कहा है कि इसमें सात काण्ड है और प्रत्येक काण्ड स्वतंत्र रूप से रामजी की भक्ति देने में सक्षम है। किसी एक काण्ड का आश्रय लेने से आपको पार लगा देगा।

एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना। रघुपति भगति केर पंथाना।।
अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाउँ देह एहिं मारग सोई।।

आपने मानस को एकांगी रूप में देखा है, पर इसमें सात खंड है और जिस पर रामजी की अति कृपा होती है वो इस पर आगे बढ़ता है। सातों काण्ड को पढ़ ले तो भला ही भला है, पर एक–एक कांड का भी आश्रय ले तो बेड़ा पार है। ऐसा यह मानस सप्त जहाज है।

भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा।।

जो संसार रूपी सागर को पार पाना चाहता है उसके लिये तो श्री रामजी की कथा दृढ़ नौका के समान है।

श्री सरस्वतीजी, श्री गणेशजी, श्री पार्वतीजी, श्री शंकरजी और श्री हरि रामजी की वंदना के साथ हम मानस में प्रवेश करते हैं।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

अक्षारों, अर्थ समूहों, रसों, छन्दों और मंगलों को करने वाली सरस्वतीजी और गणेशजी की मैं वंदना करता हूँ।

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्।।

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वतीजी और श्री शंकरजी की मैं वंदना करता हूँ, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।

ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी ऱुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है।...शेष अगले अंक

शिव महापुराण कथा

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

पिछले अंक से आगे.....

कैसे आप शिवजी को बोल देते हो कि ये तो भांग पीते हैं, गांजा पीते हैं, बैठे हैं, कुछ नहीं करते हैं। कैसे ऐसे बोल देते हैं हम लोग यह सब कुछ है? शिव तो शिव है। आप तो सुनकर कह रहे होंगे कि इन्होंने तो पूरी पार्टी बदल दी। कृपानाथ यह पार्टी नहीं बदली है भैया। जैसे अभी वर्तमान में अपनी दो राजनीतिक पार्टियों प्रमुख है ना तो दोनों पार्टियों में ऐसे-ऐसे लोग हैं जो इस पार्टी का उस पार्टी में और उस पार्टा का इस पार्टी में कोई अच्छा होता है तो बोल देते हैं कि इसमें यह तो बढ़िया है और उधर वाले में यह बढ़िया है।

शिव को जानकर फिर बोल रहा हूँ। शिव को जान के बोल रहा हूँ। बताइए गोलोक जैसा दिव्य धाम भगवान शिव ने बनाकर प्रभु को अर्पित किया और आज तक नहीं पता चलने दिया कि मैंने बनाकर दिया है। मेरे भी भैया यह ध्यान में नहीं था, अभी पिछले बनारस में शिव महापुराण की कथा की तब पढ़ने में आया। मैं तो गदगद हो गया कि जिसने हमारे प्रभु के सुख के लिए ऐसा दिव्य लोक प्रकट किया हो हम उसको कैसे भूल सकते हैं? हम कैसे उसका अनादर कर सकते हैं? हम कैसे उनके नाम से पीठ फेर सकते हैं बताओ? इसलिए शिव स्वार्थी तत्व नहीं, शिव तत्व को तो अद्भुत अद्भुत शिव तत्व को समझना हर किसी के बस की बात नहीं है।

जोगी तेरी लीला अनोखी, तू है गजब का गोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
डम डम उम डम डमरू बाजे,
काले नाग तेरे सिर पर नाचे।
तन पर भस्मी लगाने वाले,
अरे लिये हाथ में चोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
जोगी तेरी लीला अनोखी, तू है गजब का गोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
शिव की जटा सावन की घटा है,
ललाट ऊपर चंद्र छटा है,
अरे! गंगा सिर पर झिरमिर बहती,
मुक्ति का द्वार है खोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
जोगी तेरी लीला अनोखी, तू है गजब का गोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
ऋषि मुनि सब तुझको ध्यावे,
तेरा भेद समझ नहीं आवे,
अलख निरंजन नाम तिहारो,
अरे संग भूतों का टोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
जोगी तेरी लीला अनोखी, तू है गजब का गोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
कैलाश ऊपर रहने वाले,
भक्तों का मन हरने वाले,
कामदेव को भस्म किया है,
जब तीसरा नेत्र खोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
जोगी तेरी लीला अनोखी, तू है गजब का गोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
दया करो दीनों के दाता,
तुम्ही पिता हो तुम्ही हो माता
गोभक्तों ने पहन लिया है,
तेरे नाम का चोला।
शिव बम बम बम बम भोला।
जोगी तेरी लीला अनोखी, तू है गजब का गोला।
शिव बम बम बम बम भोला।

कृपानाथ ऐसे भगवान शिव है। उन्हीं भगवान शिव की अद्‌भुत अलौकिक महिमा का गुणगान श्री वेदव्यास जी महाराज ने शिव महापुराण के माध्यम से किया है। श्रावण मास में शिव महापुराण के श्रवण का विशेष महात्म्य है।

कृपानाथ नैमिषारण्य तीर्थ क्षेत्र में शौनकादि ऋषिगणों ने सूतजी महाराज से पूछा- संसार में बहुत प्रकार के अनुष्ठान होते हैं लेकिन सारे अनुष्ठान कामना पूर्ति के लिए है चित्तशुद्धि के लिए नहीं हर अनुष्ठान कोई ना कोई कामना पूर्ति के लिए है। कोई ग्रहदोष निवारण के लिए है, कोई अनुष्ठान पितृदोष निवारण के लिए है, कोई अनुष्ठान अर्थदोष निवारण के लिए है, कोई अनुष्ठान स्वास्थ्य दोष निवारण के लिए है, कोई अनुष्ठान विवाह दोष निवारण के लिए है, कोई अनुष्ठान संतान दोष के निवारण के लिए करते हैं। सूतजी! जितने अनुष्ठान हैं वे सारे अनुष्ठान कामना पूर्ति के लिए हैं, चित्तशुद्धि के लिए तो कोई अनुष्ठान होना चाहिए, अंतःकरण की शुद्धि के लिए भी तो कोई अनुष्ठान होना चाहिए।

हे भगवान! इसे ध्यान दीजिए मैं जानता भी हूँ और इसको मानता भी हूँ कि शिव महापुराण में कामना पूर्ति के भी बहुत सारे प्रयोग हैं। मैं चर्चा करूंगा कि नहीं करूंगा यह मुझे नहीं मालूम लेकिन है। शिव महापुराण की कथा को आजकल प्रयोग की कथा समझ लेते हैं। शिव महापुराण की कथा के बाद कई लोग पूछते भी हैं कि आपने कुछ बताया नहीं। हमने कहा भाई क्या बताना था? फिर बोलते हैं कि कुछ तो बताइए- क्या करने से क्या होता है, क्या करने से क्या होता है? मेरे भाई बहन कामना पूर्ति यह पुराणों का वास्तविक फल नहीं है। कामना पूर्ति पुराण का वास्तविक फल नहीं अंतःकरण की शुद्धि पुराणों का वास्तविक फल है।

कृपानाथ! शिव महापुराण का सबसे प्रथम महात्म्य जो है वह है शौनक जी का प्रश्न है। महाराज हमको अंतःकरण को शुद्ध करने वाली कथा सुनाओ और शौनकादि ऋषिगण कहते हैं शिव सदा निर्मल चेतन अंतःकरण की शुद्धि जिसके हो जाएगी उसको शिव की प्रप्ति स्वाभाविक हो जाएगी। देखिए शंकर भगवान क्रिया से मिलने वाले भगवान नहीं है। क्रिया से तो अन्य देवी देवता कृपा करते हैं शंकर भगवान सिर्फ चित्त शुद्ध होने पर कृपा करते हैं। चित्त शुद्ध है तो कृपा। कोई कितना ही चित्त शुद्ध है पर किसी देवता को प्रसन्न करना हो तो उसको कर्म करना पड़ेगा। पत्र, पुष्प, फल इकट्ठे करने पड़ेंगे फल पूरे इकट्ठे करने पड़ेंगे।

कहीं लिखा हो सकता है कि अमुक वस्तु अर्पण करें तो शिवजी प्रसन्न हो जाते हैं, अगर कहीं लिखा होगा और उसका प्रमाण भी होगा तो उसको मैं नमन करता हूँ, किन्तु जो सूत्र, जो सिद्धांत मैंने पढ़ा है, देखा है, समझा है, अनुभव किया है वह तो यही है कि जिसका अंतःकरण शुद्ध होता है उस पर शिव कृपा करते हैं, फिर भले ही आप स्वर्ण मुकुट भी क्यों न अर्पण कर दो। अंतःकरण शुद्ध नहीं है तो आप शिव की कृपा के भागी नहीं बन सकते। अरे भाई दीपावली पर सेठ ने सबको बोनस दिया इसका मतलब आप सेठ के लाडले बेटे नहीं हो गए। सेठ जी तनखा तो देते ही हैं, पर दीपावली के मौके पर सेठजी ने हजार-हजार रुपया और दे दिया तो हम क्या यह मान लें कि हम तो सेठजी के लाडले बेटे हैं इसलिए दिया है।

भैया शिव की पूजा करने पर, शिव का अनुष्ठान करने पर हमें धन मिल गया, पद मिल गया, पैसा मिल गया, प्रतिष्ठा मिल गई तो यह न समझ लीजिए कि शिव की कृपा मिल गई। मेरे भाई बहन जब राम चरणों में प्रेम हो, कृष्णा चरणों में प्रेम हो तब समझना शिव की कृपा मिल गई। शिव की कृपा चित्त शुद्ध होने पर मिलती है। भगवान शिव कृपा करते हैं निर्मल चित्त वाला......शेष अगले अंक में

भज गोविंदम
(गोविंदकी स्तुति-प्रार्थना)

(श्रीमद् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित)

...........पिछले अंक से आगे

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ,
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं,
सर्वेत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्।।

शत्रु, मित्र, पुत्र, बन्धु-बांधवों से प्रेम और द्वेष मत करो, सबमें अपने आप को ही देखो, इस प्रकार सर्वत्र ही भेद रूपी अज्ञान को त्याग दो।

कामं क्रोधं लोभं मोहं,
त्यक्त्वाऽत्मानं भावय कोऽहम्।
आत्मज्ञान विहीना मूढाः,
ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह को छोड़ कर, स्वयं में स्थित होकर विचार करो कि मैं कौन हूँ, जो आत्म- ज्ञान से रहित मोहित व्यक्ति हैं वो बार-बार छिपे हुए इस संसार रूपी नरक में पड़ते हैं।

गेयं गीता नाम सहस्रं,
ध्येयं श्रीपति रूपमजस्रम्।
नेयं सज्जन सङ्गे चित्तं,
देयं दीनजनाय च वित्तम्।।

भगवान विष्णु के सहस्त्र नामों को गाते हुए उनके सुन्दर रूप का अनवरत ध्यान करो, सज्जनों के संग में अपने मन को लगाओ और गरीबों की अपने धन से सेवा करो।

सुखतः क्रियते रामाभोगः,
पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं,
तदपि न मुञ्चति पापाचरणं।।

सुख के लिए लोग आनंद-भोग करते हैं जिसके बाद इस शरीर में रोग हो जाते हैं। यद्यपि इस पृथ्वी पर सबका मरण सुनिश्चित है फिर भी लोग पापमय आचरण को नहीं छोड़ते हैं।

अर्थमनर्थम् भावय नित्यं,
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्
पुत्रादपि धनभजाम् भीतिः,
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः।।

धन अकल्याणकारी है और इससे जरा सा भी सुख नहीं मिल सकता है, ऐसा विचार प्रतिदिन करना चाहिए। धनवान व्यक्ति तो अपने पुत्रों से भी डरते हैं ऐसा सबको पता ही है।

प्राणायामं प्रत्याहारं,
नित्यानित्य विवेकविचारं।
जाप्यसमेत समाधिविधानं,
कुर्ववधानं महदवधानं।।

प्राणायाम, उचित आहार, नित्य इस संसार की अनित्यता का विवेक पूर्वक विचार करो, प्रेम से प्रभु-नाम का जाप करते हुए समाधि में ध्यान दो, बहुत ध्यान दो।

गुरुचरणाम्बुज निर्भर भक्तः,
संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानस नियमादेवं,
द्रक्ष्यसि निज हृदयस्थं देवं।।

गुरु के चरण कमलों का ही आश्रय मानने वाले भक्त बनकर सदैव के लिए इस संसार में आवागमन से मुक्त हो जाओ, इस प्रकार मन एवं इन्द्रियों का निग्रह कर अपने हृदय में विराजमान प्रभु के दर्शन करो।

मूढः कश्चन वैयाकरणो,
डुकृञ्करणाध्ययन धुरिणः।
श्रीमच्छम्कर भगवच्छिष्यै,
बोधित आसिच्छोधितकरणः।।

इस प्रकार व्याकरण के नियमों को कंठस्थ करते हुए किसी मोहित वैयाकरण के माध्यम से बुद्धिमान श्री भगवान शंकर के शिष्य बोध प्राप्त करने के लिए प्रेरित किये गए।

भजगोविन्दं भजगोविन्दं,
गोविन्दं भजमूढमते।
नामस्मरणादन्यमुपायं, नहि पश्यामो भवतरणे।।

गोविंद को भजो, गोविन्द का नाम लो, गोविन्द से प्रेम करो क्योंकि भगवान के नाम जप के अतिरिक्त इस भव-सागर से पार जाने का अन्य कोई मार्ग नहीं है।

परमपद

(जीव का अपना असली घर)

साभार : गीता साधक संजीवनी

'गत्वा' में गति है, प्रवृत्ति नहीं। क्योंकि अंश की अंशी की ओर गति होती है, प्रवृत्ति नहीं। प्रवृत्ति तो परतः होती है, पर गति स्वतः होती है।

गति और प्रवृत्तिः- गति स्वतः-स्वाभाविक होती है और उसमें परिश्रम (प्रयत्न), उद्योग तथा कर्तृत्व नहीं होता। परन्तु प्रवृत्ति अस्वाभाविक और श्रमसाध्य, उद्योगसाध्य तथा कर्तृत्वसहित होती है। प्रवृत्ति तो अहंकारयुक्त होने पर होती है, पर गति अहंकार रहित होने पर होती है। इसलिये गति 'स्व' की तरफ होती है और प्रवृत्ति 'पर' की तरफ होती है। गति परमात्मा की तरफ होती है और प्रवृत्ति संसार की तरफ होती है। गति चिन्मयता की तरफ होती है और प्रवृत्ति जड़ता की तरफ होती है। गति असीम की तरफ ले जाती है और प्रवृत्ति सीमित की तरफ ले जाती है। गति स्वाधीन करती है और प्रवृत्ति पराधीन करती है। भोग तथा संग्रह का सुख चाहने पर प्रवृत्ति होती है और दूसरे को सुख देने पर गति होती है।

गति का उद्‌गम-स्थान 'सत् है और प्रवृत्ति का उद्‌गम-स्थान 'असत् है। जैसे, गंगा का उद्‌गम स्थान गंगोत्री है। अगर गंगा को रोक कर एक ऐसा बाँध बना दिया जाय, जो गंगोत्री से भी ऊँचा हो तो गंगा का जल स्वतः अपने उद्‌गम-स्थान गंगोत्री की तरफ जायगा। इस प्रकार गंगा का अपने उद्‌गम-स्थान की ओर जाना 'गति' है। अतः गति दो तरह से होती है- संसार (भोग और संग्रह)-की तरफ जाना बन्द करने से अर्थात् उससे विमुख होने से अथवा अपने उद्देश्य परमात्मा की तरफ जाने से अर्थात् उनके सम्मुख होने से। नित्यप्राप्त परमात्मा की जो अप्राप्ति मानी है, उसका मिटना ही परमात्मा की तरफ गति होना है। गति में परमात्मा से मानी हुई दूरी मिटती है और वास्तविक एकता प्रकट होती है।

साधक को ऐसा अनुभव होता है कि कई वर्ष पहले जैसे भाव तथा आचरण थे, वैसे अब नहीं रहें, प्रत्युत पहले से अधिक श्रेष्ठ हो गये तो यह साधक की गति हुई है। साधनावस्था में जो गति होती है, उसमें अहम का सूक्ष्म संस्कार रह सकता है, पर मुक्त होने के बाद प्रतिक्षण वर्धमान प्रेम की तरफ जो गति होती है, उसमें अहम् का सूक्ष्म संस्कार भी नहीं रहता अर्थात् अहम् का अत्यन्त अभाव हो जाता है। इसका कारण यह है कि जीव परमात्मा से जितना दूर होता है, उतना ही उसमें अहंकार रहता है। स्वरूप में स्थित होने पर भी सूक्ष्म अहंकार रहता है, जो मुक्ति में तो बाधक नहीं होता, पर अन्य दार्शनिकों से मतभेद करने वाला होता है। परमात्मा से अभिन्नता होने पर अहंकार सर्वथा मिट जाता है।

सम्बन्धः- पूर्वश्लोक में भगवान् ने अपने परमधाम का वर्णन करते हुए यह बताया कि उसको प्राप्त होकर जीव लौटकर संसार में नहीं आते। उसके विवेचन के रूप में अपने अंश जीवात्मा को भी (परमधाम की ही तरह) अपने से अभिन्न बताते हुए, जीव से क्या भूल हो रही है कि जिससे उसको नित्यप्राप्त परमात्मस्वरूप परमधाम का अनुभव नहीं हो रहा है, इसका हेतु सहित वर्णन आगे के श्लोक में करते हैं।

जो महापुरुष आदिपुरुष परमात्मा के शरण होकर परमपद को प्राप्त होते हैं, उनके लक्षण इस प्रकार से कहे गये हैं:

निर्मानमोहा जितसङ्ग दोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।

अर्थः-जो मान और मोहसे रहित हो गये हैं, जिन्होंने आसक्ति से होने वाले दोषों को जीत लिया है, जो नित्य-निरन्तर परमात्मा में ही लगे हुए हैं, जो (अपनी दृष्टिसे)सम्पूर्ण कामनाओं से रहित हो गये

हैं, जो सुख-दु:ख नाम वाले द्वन्द्वों से मुक्त हो गये हैं, (ऐसे) (ऊँची स्थिति वाले) मोह रहित साधक भक्त उस अविनाशी परमपद (परमात्मा)-को प्राप्त होते हैं।

निर्मानमोहा:- शरीर में मैं-मेरापन होने से ही मान, आदर-सत्कार की इच्छा होती है। शरीर से अपना सम्बन्ध मानने के कारण ही मनुष्य शरीर के मान-आदर को भूल से स्वयं का मान-आदर मान लेता है और फँस जाता है। जिन भक्तों का केवल भगवान में ही अपनापन होता है, उनका शरीर में मैं-मेरापन नहीं रहता। अत: वे शरीर के मान-आदर से प्रसन्न नहीं होते। एकमात्र भगवान के शरण होने पर उनका शरीर से मोह नहीं रहता, फिर मान-आदर की इच्छा उनमें हो ही कैसे सकती है?

केवल भगवान का ही उद्देश्य, ध्येय होने से और केवल भगवान के ही शरण, परायण रहने से वे भक्त संसार से विमुख हो जाते हैं। अत: उनमें संसार का मोह नहीं रहता।

जितसंगदोषा:- भगवान में आकर्षण होना 'प्रेम' कहलाता है और संसार में आकर्षण होना 'आसक्ति' कहलाती है। ममता, स्पृहा, वासना, आशा आदि दोष आसक्ति के कारण ही होते हैं। केवल भगवान के ही परायण होने के कारण भक्तों की सांसारिक भोगों में आसक्ति नहीं रहती। आसक्ति न रहने के कारण भक्त आसक्ति से होने वाले ममता आदि दोषों को जीत लेते हैं।

आसक्ति प्राप्त और अप्राप्त दोनों की होती है। किन्तु कामना अप्राप्त की ही होती है। इसलिये इस श्लोक में 'विनिवृत्तकामा' पद अलगसे आया है।

अध्यात्मनित्या:- केवल भगवान के ही शरण रहने से भक्तों की अहंता बदल जाती है। मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं, मैं संसार का नहीं हूँ और संसार मेरा नहीं है, इस प्रकार अहंता बदलने से उनकी स्थिति निरन्तर भगवान में ही रहती है। कारण कि मनुष्य की जैसी अहंता होती है, उसकी स्थिति वहाँ ही होती है। जैसे मनुष्य जन्म के अनुसार अपने को ब्राह्मण मानता है, तो उसकी ब्राह्मणपन की मान्यता नित्य-निरन्तर रहती है अर्थात् वह नित्य-निरन्तर ब्राह्मणपन में स्थित रहता है, चाहे याद करे या न करे। ऐसे ही जो भक्त अपना सम्बन्ध केवल भगवान के साथ ही मानते हैं, वे नित्य-निरन्तर भगवान में ही स्थित रहते हैं।

विनिवृत्तकामा:- संसार का ध्येय, लक्ष्य रहने से ही संसार की वस्तु, परिस्थिति आदि की कामना होती है अर्थात् अमुक वस्तु, व्यक्ति आदि मुझे मिल जाय, इस तरह अप्राप्त की कामना होती है। परन्तु जिन भक्तों का सांसारिक वस्तु आदि को प्राप्त करने का उद्देश्य है ही नहीं, वे कामनाओं से सर्वथा रहित हो जाते हैं।

शरीर में ममता होने से कामना पैदा हो जाती है कि मेरा शरीर स्वस्थ रहे, बीमार न हो जाय, शरीर हृष्टपुष्ट रहे, कमजोर न हो जाय। इसी से सांसारिक धन, पदार्थ, मकान आदि की अनेक कामनाएँ पैदा होती हैं। शरीर आदि में ममता न रहने से भक्तों की कामनाएँ मिट जाती हैं।

भक्तों का यह अनुभव होता है कि शरीर, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि और अहम् (मैं-पन)ये सभी भगवान के ही हैं। भगवान के सिवाय उनका अपना कुछ होता ही नहीं। ऐसे भक्तों की सम्पूर्ण कामनाएँ विशेष और नि:शेषरूप से नष्ट हो जाती हैं। इसलिये उन्हें यहाँ 'विनिवृत्तकामा' कहा गया है।

विशेष बात

वास्तव में शरीर आदि का वियोग तो प्रतिक्षण हो ही रहा है। साधक को प्रतिक्षण होने वाले इस वियोग को स्वीकार मात्र करना है। इन वियुक्त होने वाले पदार्थो से संयोग मानने से ही कामनाएँ पैदा होती हैं। जन्म से लेकर आज तक निरन्तर हमारी प्राणशक्ति नष्ट हो रही है.......*शेष अगले अंक में*

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

भक्ति बोली मेरा स्थान कौनसा है? तो बोले **निरंतरम् वैष्णवमानसानी**। आपका स्थान? ये जितने बैठे हैं इन भक्तों के मन में आपका स्थान है। आप अपने स्थान पर विराजमान हो जाओ। एक बात बताओ बिना यतन पूर्वक सहजता से कोई कुछ मिल जाए तो कितना अच्छा लगता है और बहुत यत्न करने पर मिले तो लगता है कि यह तो मिलना ही था, क्योंकि हमने इसके लिये बहुत परिश्रम किया। जैसे आपको बालाजी के दर्शन सहजता से हो गये और तो दर्शन हुआ है थोड़ा सा भाव रहता है 10 घंटा लाइन में खड़े रहे तब भगवान ने दर्शन दिये। बीच में अभी सांवरा जी मंदिर बंद हुआ 6 दिन तो लोग दिन में 3-3 बार घूम के आए अंदर। तो कोई चीज अचानक जब हमको मिल जाती है तब प्रसन्नता तो खूब होती है पर उसके महत्व का उसकी गरिमा का हमको पता नहीं चलता है और जो मेहनत पूर्वक हमको प्राप्त होता है तो उसको महत्व समझ में आता है।

सब लोग सोच रहे हैं कि ये भक्ति और उसके पुत्र अचानक कहाँ से आ गए? जो पूछा तो वह अपने सभी जो विराजित वैष्णव है उनके हृदय में बैठने के लिए कहा है और श्री भक्ति कहती है जिनके हृदय में मेरा स्थान है-

सकल भुवन मध्ये निर्धनास्तेपि धन्या।
निवसति हृदि येषां श्रीहरेर्भक्तिरेका।।
हरिरपि निजलोकं सर्वताथो विहाय।
प्रविसति हृदि तेषां भक्ति सूत्रोपनध्दः।।

अर्थात जिनके हृदय में एकमात्र श्री हरि की भक्ति निवास करती है वह त्रिलोकी मैं अत्यन्त निर्धन होने पर भी परम धन्य है क्योंकि जिस हृदय में भगवन की प्रिया भक्ति देवी निवास करती हैं उस हृदय में भगवन भी अपने परम धाम को छोड़कर निवास ही नहीं करते हैं बल्कि भक्ति रूपी डोरी में बंध जाते हैं।

हम लोग प्रातः काल यहाँ भगवान का पूजन करते हैं यह तो भगवान शालिग्राम का पूजन है अर्थात जिनका पूजन करते हैं उसका आह्वान करते हैं फिर विसर्जन करते हैं। कई बातें होती है ना परन्तु जो भक्त है ना वो भगवान को भक्ति से बुलाता है और भक्ति से बुलाए हुए का विसर्जन नहीं होता है। आह्वान पर आता है केवल जाता नहीं है। भक्ति की डोरी से जिसने वरण किया है परमात्मा का वह परमात्मा चाहते हुए भी छोड़कर के नहीं जा सकता।

अब श्री शौनकाादि ऋषियों ने प्रश्न किया है सूतजी से- एक बात बताइए श्रीमद्‌भागवतजी की कथा श्रवण से कौन-कौन मुक्त हो जाते हैं-

के के विशुद्धयन्ति वदन्तु मह्यं सप्ताहयज्ञेन कथामयेन।
कृपालु भिर्लोकहितं विचार्य प्रकाशितः कोऽपि नवीनमार्गः

कौन-कौन पवित्र हो जाते हैं? कौन-कौन विशुद्ध हो जाते है? यह बताइए भगवान के सप्ताह यज्ञ की कथा सुनने से कौन-कौन पवित्र हो जाते हैं? तब शौनक ऋषि कहते हैं-

ये मानवाः पापकृतस्तु सर्वदा
सदा दुराचाररता विमार्गगाः ।
क्रोधाग्निदग्धाः कुटिलाश्च कामिनः
सप्ताहयज्ञेन कलौ पुनन्ति ते।।

जो लोग सदा सर्वदा पाप करते रहते हैं दुराचार में लगे हुए हैं, कुमार्ग की ओर चल रहे हैं क्रोध की अग्नि में जल रहे हैं, कुटिल है, कामी है वे लोग भी सप्ताह के यज्ञ से पवित्र हो जाते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि हम लोग पाप करते जाएं फिर जाकर कि कथा सुन लें फिर वापस बात यह नहीं होनी चाहिये। जिस दिन हमने कथा सुनी उसके बाद में सबका त्याग कर लिया। केवल सप्ताह श्रवण से

के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण की शरण को ग्रहण करके और सब प्रपंचों से मुक्त हो जाए। बनारस में हम लोग पढ़ते थे वहाँ एक हमारे रसोइया थे तो उसने गलती से एक कबूतर मार दिया। तो गुरुजी ने बुलाया उसे कि सुबोध तूने कबूतर मार दिया? तो वह बोला गुरुदेव गंगाजी नहा आता हूँ। ऐसी बात नहीं होनी चाहिए कि हम लोग पाप करते जायेंगे, फिर पाप किया ऐसा नहीं। जब से हमने छोड़ा कि आज से अब हम पाप नहीं करेंगे, संकल्प पूर्वक गंगा स्नान किया उसके बाद किया हुआ पाप वज्रालेप हो जाता है। बताओ महाराज और कौन पवित्र होते हैं? बोले जो पांच उग्र पाप है- ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरुपत्नी गामी, गोहत्या, स्वर्णचोरी आदि इन पापों से भी मुक्त हो जाता है। जो वाणी से, मन से, कर्म से निरंतर पाप करता रहता है वह भी पवित्र हो जाता है।

अच्छा बोले क्या भूत, प्रेत, पिशाच भी मुक्त हो जाते हैं? अच्छा एक बात बताओ कोई मरने के बाद, प्रेत बनने के बाद भी मुक्त हो जाता है?

अत्र ते कीर्तयिष्याम इतिहासं पुरातनम् ।
यस्य श्रवणमात्रेण पापहानिः प्रजायते।।

बोले मैं ऐसा एक प्रसंग सुनाता हूँ जिसको सुनने से ही पाप नष्ट हो जाते हैं। बोले पूर्व काल में तुंगभद्रा नदी के तट पर आत्मदेव नाम के एक ब्राह्मण जो स्रोत स्मार्त कर्मो में निष्णात है और वह कितने श्रेष्ठ हैं, बोले भगवान सूर्य के समान उनका प्रकाश है। वह दूसरे सूर्य के समान है। वह बहुत सरल है, बहुत सज्जन है, पर उनकी पत्नी बोले सुन्दर और कुलीन होने पर भी सदैव अपनी बात पर अड़ जाती थी। वह बहुत झगड़ालू है। आत्मदेव पंडित जी की पत्नी जो है धुंधली वह बहुत झगड़ालू महिला है। किसी सज्जन पुरुष की झगड़ालू पत्नी है तो उसी को पता है कि धुंधली कैसी थी और किसी को तो मालूम नहीं हो सकता। परन्तु ब्राह्मण देवता बहुत सीधे थे। अब ब्राह्मण देवता की अवस्था बहुत ढल गई है। उनके कोई संतान नहीं है। एक दिन ब्राह्मण देवता दु:खी होकर के जंगल में जा रहे हैं। जंगल में गए और जोर से फूट-फूट कर रोने लगे। इतने में वहाँ पर एक संत महापुरुष आए। उन्होंने देखा कि बेचारा एक ब्राह्मण देवता रो रहा है। वे संत उसके समीप गए और बोले -

कथं रोदिषि विप्र त्वं का ते चिन्ता बलीयसी ।
वद त्वं सत्वरम् मह्यं स्वस्य दुःखस्य कारणम् ।।

संत बोले ब्राह्मण देवता रोते क्यों हो आप? ऐसी क्या भारी चिंता है तुमको जो तुम रो रहे हो।

ब्राह्मण देवता बोले क्या बताऊं अब मैं क्या-क्या वर्णन करूं। मेरे पिता मेरे द्वारा दी हुई जल की अंजलि स्वीकार नहीं करते, वह गर्म जल स्वीकार करते हैं। मैं जिस गाय को अपने घर में लाता हूँ, वह गए बधिया हो जाती है। मैं जिस वृक्ष को अपने घर में लगाता हूँ वह वृक्ष सूख जाता है और मेरा जीवन भी ऐसा निष्प्राण है। मेरे मरने के बाद में पितरों को अंजलि देने वाला कोई है ही नहीं। पीछे प्राण त्यागने के लिए यहाँ पर आया हूँ। यह संतान विहीन जो जीवन है यह मैं जीना नहीं चाहता हूँ।

महात्मा जी ने बहुत समझाया- पुत्र होने से ही सुख होता है यह गलत धारणा है तुम्हारी। यदि पुत्र होने से सुख होता तो राजा सागर को सुख होना चाहिए था जिसके 60 हजार पुत्र थे। जिनके 60 हजार पुत्र हैं वह भी सुखी नहीं है और जिनके एक पुत्र है राजा अंग वह भी दु:खी तो यह पुत्र होने से ही सुख हो ऐसा निश्चित नहीं। ऐसा कोई निश्चित नहीं है कि पुत्र होने से सुख हो जाएगा। इसलिए ब्राह्मण देवता-

मुंचा ज्ञानम प्रजा रूपम् बलिष्ठा कर्मणो गति।
विवेकम तू समासाद्य। त्यज संसारवासनाम्।।

यह प्रजा रूपी जो तुम अज्ञान लेकर घूम रहे हो कि पुत्र होने से सुख होगा, अरे छोड़ दो महाराज इससे कुछ नहीं होना है। अरे और तो और....शेष अगले अंक में

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

पिछले अंक से आगे.......

भरपेट भोजन न मिलने के कारण माँ-बेटा दोनों कचरा और गंदगी खाकर एवं नालियों का गंदा पानी पीकर अपना जीवन चलाने लगे। किसी भी प्राणी के लिये भूख एक ऐसी विपदा है जो उसको कुछ भी खाने के लिये मजबूर कर देती है।

शिवा एक कोलोनी में पड़े एक कचरे के ढ़ेर पर ही रहने लगा। लोग कचरा डालते उसमें सड़ी-गली सब्जियों आदि होते उसको पॉलिथीन सहित खा जाता। वहीं पास में पड़ा गंदा पानी पी लेता। माँ पूरी कालोनी में घर-घर घूमकर जो भिक्षा में मिलता वो पा लेती फिर शिवा के पास आ जाती। गंदगी खाने से शिवा बहुत कमजोर और बीमार हो गया। हम सब मनुष्यों को समझने की बात है कि प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना चाहिये और खाद्य सामग्री किसी थेली में भरकर नहीं फेंकना चाहिये, क्योंकि भूखे गोवंश थेली सहित उसे खा लेते हैं।

एक दिन शिवा उस कचरे के ढ़ेर पर असहाय पड़ा था। मां भूख-प्यास के कारण उसी बस्ती में रोटी के लिये गई हुई थी। इतने में नगरपालिका की कचरा डालने वाली गाड़ी आई और गाड़ी वाले ने लापरवाही से शिवा के ऊपर ही कचरा खाली कर दिया। वह नीचे दब गया। तड़प-तड़प कर उसने श्वास लेने के लिये मुंह बाहर निकाला, बाकी पूरा शरीर कचरे में दब गया। कुछ देर तो वह माँ-माँ चिल्लाया, फिर थककर बंद हो गया और निढ़ाल होकर पड़ा रहा। कुछ देर बाद प्रतिदिन की भांति गोमाता ढूंढ़ती-ढूंढ़ती वहाँ आई, पर शिवा उसको दिखा नहीं। वो रोकर वापिस चली गई और भोजन की जुगाड़ में भटकती रही। शाम को वापिस आई तब उसे अपना बछड़ा कचरे में दबा हुआ दिखा।

गोमाता :- शिवा बेटा यह क्या हो गया? तू कचरे के नीचे कैसे आ गया? बेटा जल्दी बाहर निकल जा।

शिवा:-माँ मैं तो बीमार था, यहाँ बैठा था। एक गाड़ी आई और मेरे ऊपर कचरा डालकर चली गई। बहुत प्रयास करने के बाद थोड़ा सा मुंह बाहर निकालकर श्वास ले पा रहा हूँ। माँ मुझे बाहर निकाल, मैं मर रहा हूँ।

गोमाता ने सींगों से प्रयास किये पर शिवा को बाहर नहीं निकाल पाई। रोती हुई वहीं बैठी रही। किसे कहे? कौन मदद करे?

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ,
समझेगा कौन यहाँ, दर्द भरे इस दिल की जुबां,
जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?

शिवा 3 दिन तक वहीं कचरे के ढ़ेर में दबा हुआ अपने प्राणों से संघर्ष करता रहा। गोमाता पेट भरने के लिये इधर-उधर जाती और लौटकर शिवा के पास आती और अपने वत्स पर आई भारी विपदा को देखकर आंसू बहाती। सामने ही एक घर था, मगर किसी ने शिवा की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। मनुष्य बहुत पापी और कठोर हो गया है। किसी प्राणी के दर्द को महसूस ही नहीं करता है और स्वयं के एक कांटा चुभ जावे तो टें-टें करने लगता है।

संयोगवश वहाँ से एक गोभक्त गुजर रहा था, उसको शिवा का सिर दिख गया। वो पास में आया तो देखकर दंग रह गया कि लोगों के सामने एक बछड़े की यह स्थिति! नगरपालिका ने जो कचरा डाला वो तो डाला ही, आसपास के घरों वाले भी प्रतिदिन उसके ऊपर और पास में कचरा फेंक कर जाते हैं। गोभक्त सोचने लगा कि कितने निष्ठूर हैं ये लोग। इतने छोटे बछड़े को खींचकर बाहर नहीं निकाला! इसके प्राण कितने दु:खी हो रहे हैं! ईश्वर

भी कितना दयालु है कि ऐसे दुष्ट लोगों को भी भोजन देता है! उस गोभक्त ने अपने साथियों को फोन लगाकर बुलाया। सबने मिलकर शिवा को बाहर निकाला तो देखा कि उसके पूरे शरीर पर कीड़े ही कीड़े! कमजोर हृदय वाला देख नहीं सकता, इतने कीड़े पड़ गये उस गंदगी के कारण। रोम-रोम में कीड़े, चमड़ी खा गये उसकी, उसका रक्त पी गए। कई दिनों का प्यासा था, उसको बिठाकर पानी पिलाया। कीड़ों के खाने के दर्द से वह थर-थर कांप रहा था और कहरा रहा था। गोमाता भी आ गई। वो शिवा को चाटने के लिये बार-बार पास में आने का प्रयास कर रही है। लेकिन उसको भी कोई संक्रमण न हो जाय इसलिये गोसेवकों ने उसे पास में नहीं आने दिया। इससे गोमाता बहुत परेशान हो गई। गोसेवक शिवा को अपने गोसेवा केन्द्र पर ले गये और उसका कई दिनों तक उचित उपचार किया।

गोसेवकों से भूल यह हुई कि वे बछड़े को अकेले ले गए और उसकी माँ पीछे रह गई। बिछुड़ने से दोनों बहुत दुःखी हो गये। गोसेवा में सभी को यह सावधानी रखना बहुत आवश्यक है कि सवत्सा गोमाता को कहीं भी ले जाना है तो माँ-बेटे को साथ में ही ले जाना चाहिये। दोनों को अलग कदापि न करें, नहीं तो बहुत बड़े पाप का भागी बनना पड़ेगा। माँ और बेटे का साथ होने से एक दूसरे को सम्बल रहता है जिससे दोनों सुखी रहते हैं और बीमारी जल्दी ठीक होती है।

कुछ समय उपचार कर उन गोभक्तों ने शिवा को वापिस उसी क्षेत्र में लाकर छोड़ा, लेकिन वहाँ उसकी माँ नहीं मिली। गोमाता अपने शिवा को ढूंढने के लिये दिनभर आसपास के क्षेत्र में घूमती रहती। शिवा भी रो-रो कर अपनी माँ को पुकारता और इधर-उधर कातर नजरों से अपनी माँ के आने की राह देखता:-

तू इतनी दूर क्यों है माँ, ...शेष अगले अंक में

गीत

(तर्ज-म्हारे संत पावना आया)

चालो रे चालो चालो, पथमेड़ा गोधाम चालो।
गोऋषि जी रो संदेश आयो, थे पथमेड़ा गोधाम चालो।
जग जननी इन गोमाता ने, अपना शीश नवालो।
गोसेवा रो अवसर आयो, जीवन सफल बनालो।
थे चालो रे चालो, चालो पथमेड़ा गोधाम चालो ।1।
बीमार और दिव्यांग गोवंश री, सेवा अद्‌भुत होवे।
इन सेवा ने देख ने भाइयों, हृदय पटल खुल जावे।।
थे चालो रे चालो, चालो........ ।2।
गोलासन में सब नंदी बाबा, एक साथ बिराजे।
सबसे बडी यह नंदीशाला, दुनिया मे कहलावे।।
थे चालो रे चालो, चालो.............. ।3।
कोटि तीर्थ सरोवर माथे, गोमाता मन्दिर बनायो।
कामधेनु रा दर्शन दुर्लभ, शक्ति पीठ बनायो।।
थे चालो रे चालो, चालो......... ।4।
पथमेडा री पावन धरा पर, गोचारण हरि कीनो।
दतात्रेय की तपो भूमि है, दर्शन कर सुख पालो।।
थे चालो रे चालो, चालो................. ।5।
सुबह शाम गो आरती होवे, देवत भी हरसावे।
कामधेनु दत्त त्रिवेणी में, डुबकी आय लगालो।।
थे चालो रे चालो, चालो........ ।6।
पथमेडा यूं केवण लागो , सुन लो रे शासन वालों।
गोहत्या ने बंद कराकर , राष्ट्र माता बनालो।।
थे चालो रे चालो, चालो पथमेड़ा गोधाम चालो
गोऋषिजी रो संदेश आयो, थे घर घर गाय पालो
थे चालो रे चालो, चालो........ ।7।
गोऋषि जी रो संदेश आयो, थे पथमेड़ा गोधाम चालो।

- गोसेवक धनराज चौधरी जोधपुर

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा गोपालन लोक संस्कृति की पुनर्स्थापना में लगाया एक और मील का पत्थर

अभिनव ब्रजमण्डल - श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगांव में हुआ गोवर्धननाथजी मंदिर व गो-गोपाल कॉरिडोर का दिव्य शिलान्यास

पथमेड़ा का छोटा प्रयास आज बन गया वैश्विक गोसेवा महाअभियान : महामहिम राज्यपाल सिक्किम श्री ओमप्रकाश जी माथुर

अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ अर्बुदारण्य में परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री की पावन निश्रा में 29 अक्टूबर को गोपाष्टमी के पावन अवसर पर भगवान श्री गोवर्धननाथजी के भव्य मंदिर एवं गो-गोपाल कॉरिडोर का ऐतिहासिक और दिव्य शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। यह भव्य आयोजन परमहंस पू. स्वामी श्री प्रज्ञानानंदजी महाराज (हरिहरानंद गुरुकुलम्, जगन्नाथ पुरी) के पावन सानिध्य में सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री ओमप्रकाश जी माथुर के करकमलों से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के पूर्व अध्यक्ष परम गोभक्त श्री राजकुमार जी अग्रवाल अहमदाबाद के यजमानत्व में सम्पन्न हुआ। पं. गंगाधर जी पाठक एवं पं. ललित जी द्विवेदी ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिपूर्वक शिलान्यास कराया। इस दौरान जालोर-सिरोही सांसद श्री लुंबारामजी चौधरी, पिंडवाड़ा विधायक श्री समाराम जी गरासिया, आहोर विधायक श्री छगन सिंह जी राजपुरोहित, पाली के पूर्व सांसद श्री पुष्प जी जैन एवं मावली के पूर्व विधायक श्री धर्म नारायण जी जोशी भी मंच पर उपस्थित रहे।

इसके बाद सुरभि सत्संग पंडाल में देशभर से आए गोभक्तों को संबोधित करते हुए अपने उद्बोधन में महामहिम राज्यपाल श्री ओमप्रकाश जी माथुर ने कहा कि "पथमेड़ा का छोटा सा प्रयास आज पूरे विश्व में गोसेवा के महाअभियान के रूप में विकसित हो चुका है। उन्होंने कहा कि परम श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज का संकल्प बहुत दृढ़ होता है। महामहिम ने कहा कि श्री गोधाम पथमेड़ा भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा की अद्भुत झलक है।" उन्होंने कहा कि "गोसेवा केवल धर्म नहीं, बल्कि मानवता की सर्वोच्च साधना है। उन्होंने कहा कि देसी गाय का महत्व मुझे कई वर्षो पहले महाराजश्री की प्रेरणा से मिला है। गवर्नर बनते ही सिक्किम में सबसे पहले गवर्नर हाउस में मैं देसी गाय लेकर आया। सिक्किम राज्य देश का पहला आर्गेनिक राज्य है, पथमेड़ा के गौभक्तों एवं गोकृषि करने वाले किसानों को आर्गेनिक कृषि के प्रशिक्षण के लिए सिक्किम भेजना चाहिये। इनके लिये राजभवन के दरवाजे सदैव खुले हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथ सिंह जी राजपुरोहित ने कहा कि देशभर में वर्तमान में रासायनिक खादों और कीटनाशकों के कारण खाद्यान्न, फल, सब्जियां, चारा आदि सब जहरीले उत्पादित हो रहे हैं जिससे मनुष्य और अन्य प्राणियों का स्वास्थ्य दिनोंदिन खराब होता जा रहा है। इसको रोकने के लिए गोवंश का संरक्षण आज मानव की आवश्यकता है। कार्यक्रम में केंद्रीय महामंत्री अर्जुन सिंह राजपुरोहित तिंवरी ने

देशभर से आए गो भक्तों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन केंद्रीय समन्वयक गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी के मार्गदर्शन में सीईओ आलोक सिंहल ने किया।

समारोह में देशभर से पधारे हजारों साधु-संत और गौभक्त एवं श्रद्धालुजन उपस्थित रहे। गोपूजन, शिलान्यास और सभा स्थल पर हुए वैदिक मंत्रोच्चार और भव्य व्यवस्थाओं ने पूरे क्षेत्र में एक आध्यात्मिक वातावरण का संचार किया।

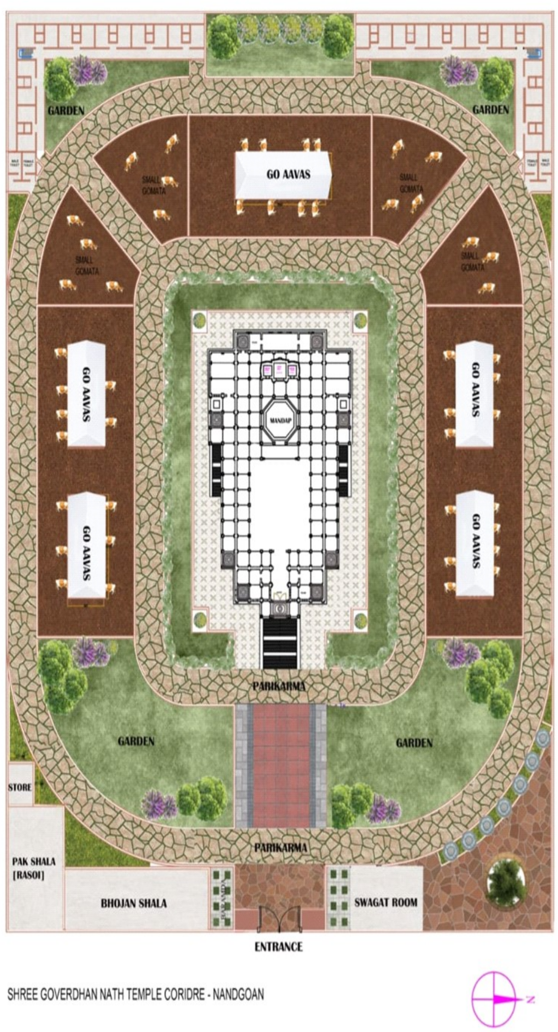

प्रस्तावित नक्शा

श्री गोवर्धननाथजी का मंदिर व गो गोपाल कॉरिडोर

श्री गोवर्धनाथाय नमः

श्री गोवर्धननाथजी के अभिनव ब्रजमण्डल पधारने का संक्षिप्त इतिहास

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।
ठाकुरजी के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए।।

हरि अनंत हैं (उनका कोई पार नहीं पा सकता) और उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते-सुनते हैं। ठाकुरजी के सुंदर चरित्र करोड़ों कल्पों में भी गाए नहीं जा सकते। ठाकुरजी की लीलाएं अपरम्पार है।

गोवर्धननाथजी को गैया सबसे प्रिय है। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना श्री गोपाल कृष्ण जी द्वारा ही की गई है और यह उनकी गोपालन लोक संस्कृति की पुनर्स्थापना हेतु की जा रही लीला का प्रमुख आधार है। भारत की पवित्र भूमि पर चारों तरफ गोपालन लोक संस्कृति का ह्रास हो रहा है और गोमाता का अपना कोई नहीं होने से गैया और गोभक्तों की पुकार पर गोपाल गोविन्द भगवान ने अपने ही एक प्रिय सखा को परम श्रद्धेय श्री पथमेड़ा वाले महाराज जी के रूप में धरती पर भेजा और अपनी इस लीला में मुख्य पात्र बनाया। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना से ही महाराजश्री सबको यही बात कहते आये हैं कि गोसेवा श्री गोपाल कृष्ण का निज कार्य हैं। श्री गोपाल ने कृपा करके हम सभी गोभक्तों का जीवन धन्य करने हेतु अपने पावन कार्य में नियोजित किया है। महाराजश्री हमेशा यह भी कहते हैं कि हमारे श्री गोपाल कृष्ण जी गैया के बीच में ही रहते हैं।

हम सभी ग्वालबालों को प्रतीक्षा थी कि अपने श्री गोपाल कृष्ण ठाकुरजी हमारे बीच में कब पधारेंगे, वो अब श्री गोवर्धन नाथ ने पूरी कर दी है। संवत् 2082 में परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के हृदय में अर्चावतार

भगवान श्री मीरा-माधव सरकार के लिए महाकुंभ प्रयागराज और द्वापरयुगीन ब्रज तीर्थ प्रवास करवाने का भाव आया। परम श्रद्धेय महाराजश्री सैंकड़ों गोभक्तों के साथ श्री मीरा-माधव सरकार को तीर्थयात्रा करवाने हेतु श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा स्थापित अभिनव ब्रजमण्डल से विजय हुए।

ओरछा चित्रकूट होते हुए प्रयागराज महाकुंभ पर त्रिवेणी स्नान के उपरान्त श्री मीरा-माधव गोतीर्थ यात्रा संघ द्वापरयुगीन ब्रजमण्डल पहुंच गया। यहाँ के प्रमुख-प्रमुख स्थानों के दर्शन किये। तीन दिन का ब्रजवास करके श्री मीरा-माधव सरकार को उनकी दो सखियों सहित गोवर्धन चंद्रसरोवर पर एक विशेष कुंज में विराजमान करवाकर महाराजश्री के साथ सभी तीर्थ यात्रियों ने श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के लिए प्रस्थान कर लिया ।

उपरोक्त कार्यक्रम संपन्न होने के दो माह पश्चात श्री मीरा-गोपाल सरकार को पुन: अभिनव ब्रजमण्डल पधारना था, इसलिए उन्होंने महाराजश्री को प्रेरणा की। महाराजश्री अन्य गोसेवी प्रेमी संतो तथा गोभक्त कार्यकर्ताओं को साथ लेकर भगवान मीरा-माधव सरकार को लिवा लाने हेतु अभिनव ब्रजमण्डल से सीधे गोवर्धन स्थित चंद्रसरोवर पहुँच गए। ब्रज आगमन पर ब्रजवासियों ने बड़ा भावपूर्ण स्वागत सत्कार किया। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप जी बंसल और श्री सूरश्याम गोशाला चन्द्र सरोवर के महाप्रबंधक श्री देवेन्द्र जी के नेतृत्व में प.श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज जी सहित आगन्तुक अभिनव ब्रजमण्डल वासियों के लिए भोजन प्रसाद व रात्रिकालीन विश्राम हेतु श्रेष्ठ व्यवस्थाएं की गई।

दूसरे दिन प्रात:काल से प.श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज के द्वापरयुगीन ब्रजमण्डल आगमन का समाचार सुनकर बड़ी संख्या में ब्रजवासी साधु संत महात्मागण चन्द्र सरोवर पधारे। उसी दिन सायंकाल ब्रज के विशिष्ठ संत महात्माओं सहित श्री अग्र मलूकद्वाराचार्य पूज्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज वृन्दावन वाले चन्द्र सरोवर पधार गए। तत्पश्चात वेदलक्षणा गोघृतामृत से तैयार सामाग्री का छप्पन भोग प्रसाद भगवान श्री गोवर्धननाथजी को पधराया गया। आरती उपरांत गुणीजनों द्वारा श्री गोपाल जी के दिव्य पदों का घंटो पर्यन्त गायन किया गया। तदुपरांत प.श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज एवं पूज्य श्री मलूकपीठ वाले महाराज जी के पावन सानिध्य में सभी श्रद्धालुओं ने श्री गोवर्धननाथ जी एवं चन्द्र सरोवर की परिक्रमा संपन्न करके प्रसाद ग्रहण किया।

रात्रिकालीन 10 बजे पश्चात अति विशिष्ठ ब्रजवासी संत महात्माओं के साथ पूज्य मलूकपीठ महाराज जी की प.श्रद्धेय पथमेड़ा वाले महाराजश्री के साथ आवास पर एकांतिक वार्ता प्रारंभ हुई। इसी क्रम में प.श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज जी ने सत्चर्चा के समय बताया कि हमारे हृदय में श्री गोवर्धननाथजी को अभिनव ब्रजमण्डल में पधराने का भाव हुआ है। इस पर पूज्य मलूकपीठ वाले महाराज जी सहित उपस्थित ब्रजवासी संत महात्माओं ने अवगत करवाया कि 5000 वर्षो के इतिहास में श्रीनाथ जी के अतिरिक्त गिरिराज से द्वापरयुगीन ब्रजमण्डल से कभी कोई गोवर्धननाथजी का स्वरूप बाहर नहीं ले गया है। गोवर्धननाथजी के सवा इंच से बड़े स्वरूप को ले जाने की शास्त्रीय अनुमति नहीं है। यहाँ के इतिहास अनुसार कोई श्रद्धालु भक्त सवा इंची गिरिराज शिला का स्वरूप ले जाता है तो बदले में उनके वजन से सवा गुणे स्वर्ण का यहाँ दान करके किसी ब्रजनिष्ठ संत महात्मा के कर कमलों से ग्रहण करके ही ले जा सकते हैं। सवा इंच से बड़ा गिरिराज जी का स्वरूप ब्रज से बाहर देने और ले जाने वाले अंधे, विकलांग, पागल होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

इसके बाद पुन: पूज्य मलूकपीठ महाराज जी बोले कि कारक महापुरुष, जीवन मुक्त नित्यलीलालीन भगवद परिकर, निज जन के भावों पर धर्मशास्त्रों का अनुशासन नहीं होता है। अत: श्री गोपाल कृष्ण भगवान को अभिनव ब्रजमण्डल में विराजमान होकर

अति विशिष्ठ गोचारण की दिव्य लीलाएं करनी होगी। इसलिए अपने निज सखा प.श्रद्धेय पथमेड़ा महाराज जी के हृदय में उक्त प्रेरणा प्रकट की होगी। इस पर पथमेड़ा महाराज जी ने कहा शास्त्रीय नियम अनुसार श्री गिरिराज का स्वरूप पधराने हेतु सोना तो हमारे पास नहीं है। धर्म शास्त्र बताते हैं कि गोमय में लक्ष्मी बसती है, गोवर्धननाथजी के वजन का सवा गुणा गोमय दे सकते हैं। पूज्य मलूकपीठ महाराज जी सहित उपस्थित सभी संत महात्माओं ने प.श्रद्धेय पथमेड़ा वाले महाराज जी के भावों का अनुमोदन करके रात्रिकालीन विश्राम हेतु विदाई ली।

चन्द्रसरोवर गोशाला के पास चंद्रसरोवर पर गो उपासक ब्रजनिष्ठ संत श्रीठाकुर दास जी बाबा के इष्टदेव श्री गिरिराज जी भगवान का विग्रह विराजमान है। प्रातःकाल चार बजे मीरा-माधव सरकार के अभिनव ब्रजमण्डल से विजय पूर्व प.श्रद्धेय पथमेड़ा महाराजश्री श्री गिरिराज जी भगवान के दर्शन व प्रणाम करके बैठ गए। एक हाथ से 6 इंच का स्वरूप लिया ही था कि अचानक एक अद्भुत लीला हुई। एक बड़े 36 इंच के गोवर्धननाथजी शिला के स्वरूप में महाराजश्री के दूसरे हाथ में फूल की तरह हल्के होकर आ गये। 3 फुट की शिला में बहुत वजन होता है, लेकिन महाराजश्री के हाथ पर बहुत हल्के लग रहे थे। महाराजश्री ने अपने पास से वस्त्र ओढ़ाया और सोचा कि ये तो स्वयं ही आना चाह रहे हैं तो हम कैसे मना करें।

महाराजश्री ने पास में खड़े धर्मशरणजी और बलवन्त जी को संकेत किया कि गोवर्धननाथजी को बस में विराजमान करवाओ। आप दोनों ने मिलकर प्रयास किया लेकिन गोवर्धनाथजी को उठा नहीं पा रहे थे तो मन ही मन प्रार्थना की कि प्रभु हल्के हो जाओ हम आपको उठा नहीं पा रहे हैं तो वे थोड़े हल्के हो गये तब आप दोनों मिलकर बस तक ले गये। वहाँ बस चालक तुलसी जी खड़े थे दौड़कर आये और गोवर्धननाथजी को अकेले ने इन दोनों के हाथ से लेकर आसानी से बस में सीट पर विराजमान करवा दिये।

इससे घण्टाभर पहले ही मीरा-माधव सरकार की गोवत्सा सखियों स्नान संध्या के लिये रथ से बाहर गई। थोड़ी देर में लौटकर आई तो मीरा-माधव सरकार के आगे एक किशोर लेट रहा था। एक गोवत्सा सखी ने पूछा आप कोन हैं? किशोर ने उत्तर में कहा कि मैं ब्रज का ग्वाल हूँ। यह सुनते गोवत्सा सखी के हृदय में आया कि ये श्रीठाकुरजी हो सकते हैं लेकिन ऊपर से बोले कि आप रथ से नीचे उतर जाइए। किशोर थोड़ा उदास होकर तिरछी नजर से देखते हुए चला गया। बाद में जब दूसरी गोवत्सा सखी आई तब दोनों को आभास हुआ कि वे तो स्वयं श्री गोपाल जी थे, हमने उनको यहाँ से जाने का कहकर अच्छा नहीं किया। इस प्रकार सोचकर दोनों गोवत्सा सखियों पश्चाताप कर बहुत दुःखी होकर अपने अनुज द्वारा प.श्रद्धेय महाराजश्री को उक्त समाचार निवेदन कराया। इस पर कुछ देर के लिये महाराज जी का कण्ठ अवरोधित हो गया। थोड़ी देर बाद महाराजश्री बोले कि वह ब्रज के ग्वाल हमारे साथ ही हैं। अपनी दीदियों को कहना दुःखी न हों।

इससे यह संकेत मिलता है कि ठाकुरजी अभिनव ब्रजमण्डल आने के लिये लालायित थे। इसलिये रथ रवाना होने से पहले ही उसमें आकर विराजमान हो गये, वहाँ से उतार दिये तो अर्चावतार लेकर महाराजश्री की गोद में आकर विराज गये कि मैं तो आपके साथ चलूंगा ही।

वृंदावन से महाराजश्री गोवर्धननाथजी के संग नाथद्वारा पधारे और वहाँ से नेतरा होते हुए अभिनव ब्रजमण्डल पधारे। अभिनव ब्रजमण्डल मुख्य द्वार पर श्री गोवर्धननाथजी के स्वागत हेतु ग्वाल-ग्वालिनें और गोभक्त फूल मालाओं और गाजों-बाजों के सहित तैयार थे। मुख्य द्वार पर गोमाता का पूजन करवाकर गोभक्तों ने फूल बरसाये और बधाई के साथ गोवर्धननाथजी को अंदर लिये तो गोष्ठों में

गोमाताएं पूंछ उठाकर झूंम-झूमकर नाचने लगी। गौएं दौड़-दौड़कर श्री गोवर्धननाथ जी की बस की तरफ आने लगी। ग्वालबालों में भी बड़ा उत्साह दिखाई दिया जैसे वर्षो से बिछड़ा हुआ उनका सखा आ गया। कब के बिछुड़े हुए हम आज कहाँ आ के मिले।

अभिनव ब्रजमण्डल की परिक्रमा कर श्री गोवर्धननाथजी ने निदेशालय में विश्राम किया। चन्द्रसरोवर पधराये 56 भोग से ठाकुरजी को अजीर्ण हो गया, इसलिये 5 दिन विश्राम के बाद अभिषेक किया गया। उस दौरान ठाकुरजी को खड़े किये तो ठाकुरजी का बाल स्वरूप खड़ा नहीं हो पा रहा था तब पीछे एक नारियल भिड़ाकर रखा तो नारियल की जगह ठाकुरजी के स्वरूप के गड्ढा हो गया। गोवर्धननाथजी के इस शिला स्वरूप में नाक, आँख, मुँह, पेट आदि सब उभर आये।

गोवर्धनाथजी की सेवा हेतु वृन्दावन से गोस्वामी जी को बुलाये गए। ठाकुरजी का नाप लेकर वस्त्र सिलवाने दिये तब ठाकुरजी 36 इंच के थे और वस्त्र आने पर ठाकुरजी 28 इंच के हो गये। इस प्रकार गोवर्धननाथजी के स्वरूप की लम्बाई, वजन आदि में परिवर्तन की लीला भी हुई।

फिर गोस्वामी के कहे अनुसार गोवर्धननाथजी को एक छोटे मंदिर में धर्माचार्य में विराजमान करवाये गये जहाँ प्रतिदिन नियम से आपकी बालरूप में आरती और सेवापूजा हो रही है। सभी गोभक्त और भगवत भक्त श्री गोवर्धननाथजी के अभिनव ब्रजमण्डल पधारने पर बहुत प्रसन्न हैं और मनोभाव से गोसेवा करते हैं। अब महाराजश्री के सत् संकल्प अनुसार गोवर्धननाथजी का भव्य मंदिर और गो गोपाल कोरिडोर बनाया जाना सुनिश्चित हुआ है जिसका भूमिपूजन और शिलान्यास समारोह गोपाष्टमी, 29 अक्टूबर को बड़े धूमधाम से सामारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। बालकृष्ण के सखा प. श्रद्धेय महाराजश्री को श्री ठाकुरजी की अनुमति होने पर ही अभिनव ब्रजमण्डल से बाहर प्रवास पर जाना होता है।

अभिनव ब्रजमण्डल में 7 अक्टूबर को मनाया गया शरदोत्सव

हजारों गोमाताओं के मध्य शरद पूर्णिमा की चांदनी रात में अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोक में परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के पावन सानिध्य में दिनांक 7 अक्टूबर को हजारों गोभक्तों की उपस्थिति में दिव्य शरदोत्सव मनाया गया। गोधूलीवेला में वृषभ रथारूढ़ भगवान श्री मीरा माधव के साथ रमणरेती से गोष्ठों के मध्य से होते हुए श्री गोवर्धननाथ जी के मंदिर तक शोभायात्रा निकाली गई तत्पश्चात भगवान की आरती उपरान्त रात्री 1 बजे तक गो-गोपाल भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। सुप्रसिद्ध भजन गायिका सुश्री निधिजी खानी और गायक गोवत्स श्री दिव्यांशुजी ने अपने ठाकुर जी की रास लीलाओं के मधुर भजनों से अभिनव ब्रजमण्डल के धोरों में शरद पूर्णिमा की चांदनी रात और गुलाबी ठण्ड के वातावरण को भक्तिमय बना दिया। रात्री 1 बजे से गोभक्तों ने वेदलक्षणा गोमाताओं के अमृत तुल्य दूध से बनी खीर का दिव्य प्रसाद पाया।

इससे पूर्व दोपहर बाद 1 बजे परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के पावन सानिध्य में समन्वय कार्यालय में श्री गोधाम पथमेड़ा गोशाला संचालक मण्डल की बैठक आयोजित की गई जिसमें महत्वपूर्ण निर्णय पारित किये गये। उत्सव के मनोरथी गोभक्त श्री राजकुमार जी अग्रवाल अहमदाबाद थे।

लम्पी नामक राक्षस से बचाव एवं उपचार के लिए आगे आया श्री पथमेड़ा गोचिकित्सालय बाड़मेर

देश में सर्वाधिक वेदलक्षणा गोवंश वाले जिलों बाड़मेर-जैसलमेर के प्रथम व सबसे बड़े गोचिकित्सालय श्री पथमेड़ा गोचिकित्सालय बाड़मेर

जिसकी स्थापना परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के कर कमलों से 2012 में हुई थी के द्वारा बाड़मेर-जैसलमेर जिलों में लंपी की भयंकर बीमारी के हालातों को देखते हुए गोवंश की विकट परिस्थिति में सेवा एवं महाराजश्री के आदेश से जिला प्रशासन के सहयोग से पथमेड़ा लम्पी चिकित्सा केंद्र की व्यवस्था की गई।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के सीईओ एवं श्री पथमेड़ा गोचिकित्सालय बाड़मेर के अध्यक्ष श्री आलोक जी सिंघल ने बताया कि 4 अक्टूबर से प्रारम्भ इस लम्पी चिकित्सा केन्द्र में अब तक 200 से अधिक लम्पी पीड़ित गोवंश आ चुका है। गोचिकित्सकों के अथक प्रयासों के बाद भी 50 से अधिक गोवंश असमय ही काल का ग्रास बन गया और शेष स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहा है। दूर दराज के क्षेत्रों से प्रतिदिन पाँच से दस लम्पी पीड़ित गोवंश चिकित्सा हेतु पहुँच रहा है। दो बार प्रेस वार्ता रखी गई एवं टीवी डिबेट्स में भी लम्पी की भयावयता व श्री गोधाम महातीर्थ के सेवा कार्यो को प्रस्तुत किया गया जिससे केन्द्रीय दल ने आकर बाड़मेर -जैसलमेर जिलों में लंपीग्रस्त गोवंश का अवलोकन किया एवं भविष्य की कार्ययोजना बनाने का विश्वास जताया। क्षेत्रीय विधायक श्रीमती प्रियंका चौधरी ने श्री गोधाम पथमेड़ा की सेवाओं को अद्भुत अद्वितीय बताया एवं एक गोचिकित्सा वाहन समर्पित किया। लम्पी महामारी से लड़ने में संपूर्ण देश के गोभक्त, गोसेवक गोसेवा में जुटे यही समय की मांग है।

''मैं हूँ भीमा भारत का''
पुस्तक का हुआ विमोचन

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के कर कमलों से दिनांक 22 अक्टूबर को अभिनव ब्रजमण्डल, श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगाँव में गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा से प्रकाशित श्री अम्बा लाल सुथार द्वारा लिखित 'एक नंदी की आत्म कथा' ***मैं हूँ भीमा भारत का*** नामक पुस्तक का विमोचन हुआ। यह पुस्तक एक कहानी के रूप में है। भारत में एक नंदी होने का क्या मतलब है और वो अपने पूरे जीवन में हमारे बीच रहकर कितना कष्ट भुगतता है और वो आपसे क्या कहना चाहता है, उसका ***भीमा नंदी*** द्वारा अपनी आत्मकथा में जीवन्त चित्रण किया गया है। साथ ही समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, व्यभिचार, शराबखोरी आदि अनेक बुराइयों को भी बहुत ही व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें।

गोनवरात्र महोत्सव आयोजित हुआ धूमधाम से

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज के पावन सानिध्य में संचालित गोसेवा मुख्यालय श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा, श्री अभिनव ब्रजमण्डल, श्री महावीर हनुमान नंदीशाला गोलासन, श्री ठाकुर गोसेवाश्रम पालड़ी, श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया सहित समस्त गोसेवा प्रकल्पों में 22 से 30 अक्टूबर तक गोनवरात्र महोत्सव का आयोजन किया गया। सभी गोशालाओं में प्रतिदिन गोपूजन, गोभंडारा, ग्वालबाल भोज का आयोजन किया गया। इसके तहत गोपाष्टमी को सभी गोशालाओं में गोचारण करवाया गया। गोपाष्टमी पर्व पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी समस्त गोसेवकों को पारितोषिक और प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया गया। विशिष्ट सेवा/उत्कृष्ट कार्य करने वाले गोसेवकों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान किये गये।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

जय गोमाता
|| श्री सुरभ्यै नमः ||
जय गोपाल
वैदिक गो उत्पाद
फाउण्डेशन द्वारा उत्पादित
7300044444
वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा
सात्विक आहार - शुद्ध विचार
हर्बल देसी गाय का A2 बिलोना घी
देसी गाय का A2 बिलोना घी
|| पूजा उत्पाद ||
वैदिक गोदर्शन धूप
वैदिक गोबर कण्डा
COW DUNG CAKES
देव सम्पदा धूपबत्ती
वैदिक देव सम्पदा धूप
मोगरा धूपबत्ती
वैदिक मोगरा धूप
गुग्गुल धूपबत्ती
वैदिक गुग्गल धूप
चन्दन धूपबत्ती
वैदिक चन्दन धूप
|| डेरी प्रोडक्टस ||
दूध
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा
भारतीय देशी गाय का दूध
500ml.
छाछ
500 ML.
Vanila Lassi
वेनीला लस्सी
Mango Lassi
केसर लस्सी
Kesar Lassi
मेंगो लस्सी
Dahi
दही
|| हर्बल कॉस्मेटिक्स ||
सरसो तेल
हर्बल शेम्पु
केसर चन्दन क्रीम
वेदलक्षणा शहद
नीम एलोवेरा
लेमन हेन्डवॉश
एलोवेरा शेम्पु
हर्बल हेयर ऑयल
बोडी-लोशन
केसर फेसवोश
आंवला हेयर ऑयल
www.vedlakshana.com
7300044444

कुल पृष्ठ- 36
नवंबर 2025

प्रकाशन तिथी : 01 नवंबर 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गोसेवार्थ सहयोग के प्रकार

1. एक गोमाता को गोद लेकर परिवार का सदस्य बनायें प्रतिवर्ष — रु 21000
2. आओ हरा घास चारा अर्पित करें प्रति गाड़ी — रु 31000
3. आइये सूखे घास चारे की सेवा करें प्रति गाड़ी — रु 1,01,000
4. गोमाता की सेवा में अक्षय भूदान समर्पित करें प्रति बीघा — रु 2,51,000
5. जीवन के साथ भी-जीवन के बाद भी आजीवन गोसेवक बनें प्रति गोवंश — रु 2,51,000
6. गुड़ की एक गाड़ी गोमाता को परोसें सेवा राशि — रु 4,51,000
7. अशक्त गोवंश हेतु पौष्टिक आहार की प्रति गाड़ी सेवा राशि — रु 5,00,000
8. बीमार गोवंश का उपचार करें मासिक सेवा राशि — रु 11,00,000
9. गोधाम द्वारा सेवित गोवंश सेवार्थ एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा-सूखा घास चारा अर्पित करें सेवा राशि — रु 35,00,000

NAME - SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
BANK OF BARODA A/C - 08490100023827 | IFSC - BARB0ASHRAM (FIFTH CHARACTOR IS ZERO)
Branch : Ashram Road, Ahmedabad, Mob: 77420 93179, 76650 59999, 70730 00151